



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)
प्रांतिकार का प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 471]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 26, 1991/भाद्र 4, 1913

No. 471] NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 26, 1991/BHADRA 4, 1913

इस भाग में भिन्न पृष्ठ तथा उनी जाती हैं जिसमें कि यह अवगत कर्त्तव्य वाले वापर के रूप का सामग्री का साहै

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(राजस्व विभाग)
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड
प्रधिमूलना

नई दिल्ली, 26 अगस्त, 1991

धन-कर

का. आ. 550(अ) .—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) को धारा 46 द्वारा प्रवर्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, धन-कर नियम, 1957 का और संशोधन करने के लिए तिमालिकित नियम बनाता है, अर्थात् :—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम धन-कर (संशोधन) नियम, 1991 है।

(2) ये 1 अक्टूबर, 1991 को प्रवृत्त होंगे।

2. धन-कर पर नियम, 1957 में, प्ररूप के स्थान पर तिमालिकित प्ररूप रद्द जाएगा, अर्थात् :—

प्ररूप “क”

शुद्ध धन की विवरणी

[नियम 3 (1) (क) देखिए]

छवि 1

रम्पीद सं
नारीघर

(व्यक्तियों और अविभक्त कुटुम्बों के लिए)

(इन प्ररूप की भरने से पहले संलग्न टिप्पण ध्यानपूर्वक पढ़ें)

1. मूल/पुनरीक्षित/धारा 16 (4) (i)/17 के प्रधीन 2. निर्धारण वर्ष 19

-19

3. मूल्यांकन की

तारीख 19

4. यदि पुनर्निर्मित विवरणी हैं तो मूल विवरणों
फाइल करने का रसीद राखेंगे और तारीख

5. पायी लेखा संस्थान/र्चा. पाई. प्रारं चं.
वाई/मॉकिलरेज

19

6. प्राप्तिथिति

7. निवास प्राप्तिथिति

8. नाम (पहले उपनाम) (स्पष्ट अक्षरों में)

9. निवास का पता (स्पष्ट अक्षरों में)

टेलीफोन _____ पिन _____

10. कार्यालय का पता (स्पष्ट अक्षरों में)

टेलीफोन _____ पिन _____

11. कृपया उपदण्डित कीजिए :

(क) क्या आप भारत के नागरिक हैं ? हाँ/नहीं

(ख) क्या यह आपका पहला धन-कर निर्धारण है ? हाँ/नहीं

(ग) क्या आपका आय-कर के लिए निर्धारण किया गया है ? हाँ/नहीं

(घ) क्या आपने इसी निर्धारण वर्ष के लिए आय/दान की विवरणी फाइल की है ?

(i) आय की विवरणी हाँ/नहीं

(ii) दान की विवरणी हाँ/नहीं

यदि (घ) का उत्तर हाँ में है तो किस/किन तारीख (तारीखों) को और किस वाई/मॉकिलरेज में ?

(i) आय की विवरणी

(ii) दान की विवरणी

(ङ) क्या विवरणी विधिक प्रतिनिधि के रूप में फाइल की जा रही है ? हाँ/नहीं

(च) हिन्दू अविभक्त कृष्ण की दशा में :-

(i) क्या हिन्दू अविभक्त कृष्ण का कम से कम कोई एक ऐसा सदस्य है जिसका इस निष्ठारण वर्ष के लिए शुद्ध धननिर्धारणीय है ? हाँ/नहीं

(ii) क्या हिन्दू अविभक्त कृष्ण के सबस्यों के बीच 31 दिसम्बर, 1978 के पश्चात् कोई विभाजन हुआ है ? हाँ/नहीं

(छ) क्या ऐसी कोई आस्तियां, जो ठीक पूर्ववर्ती निर्धारण वर्ष के लिए शुद्ध धन की विवरणी में दिक्कार्ह गई थी, इस विवरणी में अपवर्जन कर दी गई हैं ? हाँ/नहीं

यदि (छ) का उत्तर हाँ में है तो उनके व्ययन की तारीख और रीति और उनके प्रतिकल यदि कोई हो, के संबंध में विवरणी के साथ विशिष्टियां संलग्न करें।

(ज) क्या आपने किसी दीहरे कराधान से राहत का दावा किया है ? हाँ/नहीं

(i) विदेशों में करार के अधीन हाँ/नहीं

(ii) उन देशों के बारे में जिनके साथ कोई करार नहीं है

देग का तारम ---

हाँ/नहीं

हाँ/नहीं

हाँ/नहीं

हाँ/नहीं

भाग - 1

शुद्ध धन की, जिसके अन्तर्गत अन्य व्यक्तियों का ऐसा शुद्ध धन भी है जो मूल्यांकन की तारीख को निर्वाचिति के शुद्ध धन में सम्मिलित किए जाने योग्य है, संगणना।

क. स्थावर सम्पत्ति

आस्तियों के रूप में धारित, कारबार या वृत्ति की आस्तियों से भिन्न

1. वर्णन और स्थिति

अनुसूची-III के अनुसार मूल्य

(क)

(ख)

2. उपर्युक्त 1 (ख) में रकमों का योग

3. घटाइए : छूट

वर्णन

रकम

4. उपर्युक्त 3 का योग

5. आस्तियों के रूप में धारित ऐसी स्थावर संपत्ति का संकलित जो मूल्य कारबार या वृत्ति की आस्तियों से भिन्न है (1-4) कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित

6. वर्णन और स्थिति

अनुसूची - III के अनुसार मूल्य

(क)

(ख)

7. उपर्युक्त 9 (ख) में रकमों का योग

8. घटाइए : छूट

वर्णन

रकम

9. उपर्युक्त 8 का योग

10. कारबार या वृत्ति की आस्तियों
के रूप में धारित स्थावर संपत्ति
का संकलित मूल्य (7-9) _____ रु.

11. स्थावर सम्पत्ति का संकलित मूल्य (5 + 10) _____ रु.

ख. जंगम संपत्ति
आस्तियों के रूप में धारित, कारबार या वृत्ति की आस्तियों से जिन

1. वर्णन मूल्यांकन की तारीख को रकम
(1) हाथ में नकदी _____ रु.

(2) उधार और अप्रिम (कृपया चिनिंहिट करें) _____ रु.

_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु. योग _____ रु.

(3) बैंक में नकदी लेखा सं. लेखा का प्रकार _____ रु.
(बैंक/शाखा का नाम) _____ रु.
_____ रु.
_____ रु.
_____ रु. योग _____ रु.

(4) बहुमूल्य धातु भारत सकल शुद्ध अनुसूची - III के अनुसार मूल्य
(क) स्वर्ण _____ रु.
(ख) चांदी _____ रु.
(ग) प्लेटीनम _____ रु.
(घ) अन्य _____ रु. योग _____ रु.

(5) आभूषण

(क) स्वर्ण आभूषण _____ रु.
(ख) चांदी के आभूषण _____ रु.

(ग) प्लेटीनम या किसी अन्य बहुमूल्य धातु या उसकी मिश्र धातु से बने आभूषण _____ रु.

(घ) रत्न या उपरत्न मध (i) से (v) तक के योगों का कुल योग _____ रु. योग _____ रु.
(परवर्ती पूँछ को अप्रमाणित)

(6) डिवेलपर

(पूर्ववर्ती पृष्ठ से अग्रसीत)

कंपनी का नाम अंकित मूल्य प्रति कुल धारित यूनिट अनंतसूची - III के अनुसार

कोटि किए

गए _____ ह. _____ ह. _____ ह.

कोट नहीं

किए गए _____ रु. _____ रु. _____ रु. _____ रु. योग _____ रु.

(7) अधिगानी शेयर

कोट किए

गए _____ रु. _____ रु.
_____ रु. _____ रु.

અંગે નહીં

किए गए _____ रु. _____ रु. _____ रु. योग _____ रु.

(8) कोट किए गए साधारण शेयर

—	—	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—

(9) कोट नहीं किए गए साधारण शेयर

(10) अस्य (कृपया विनिर्दिष्ट करें)

2. आस्तियों के रूप में धारित ऐसी जंगम संपत्ति का कुल मूल्य, जो कारबार या वृत्ति की आस्तियों से भिन्न है।

(प्रथात् मद 1 (1) से 1 (10) तक के योगों का कुल योग)

— रु. (परखति पृष्ठ को अप्रनीत)

कारबाह या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित (प्रत्यक्षित पृष्ठ से अनुनीत)

3. संपत्ति का वर्णन
(क)

अनन्तर्भुची-III के अनुसार मूल्य
(ख)

4. उपर्युक्त 3 (ख) की रकमों का योग

_____ रु.

5. उपर्युक्त 2 और 4 की रकमों का योग

_____ रु.

6. छूट घटाएँ

वर्णन

रकम

7. उपर्युक्त 6 का योग

_____ रु.

8. जंगम संपत्ति का संकलित मूल्य (5-7)

_____ रु.

ग. किसी कर्म या व्यक्तियों के संगम में उसके भागीदार या सवास्य के रूप में धारित हित

1. (क) कर्म

नाम और पता

अनन्तर्भुची-III के अनुसार मूल्य

(ख) व्यक्तियों का संगम

योग _____ रु.

योग _____ रु.

2. उपर्युक्त 1 (क) और 1 (ख) का योग

_____ .

3. छूट घटाईए

वर्णन

रकम

		रु.

4. उपर्युक्त 3 का योग

5. किसी फर्म या व्यक्तियों के संगम में उसके भागीदार या सदस्य के रूप में धारित हित का संकलित मूल्य (2+4)

ष. निधीरिती द्वारा देय अरु उसके द्वारा चलाए जाने वाले कारबार या बृति से संबंधित

1. अरु उस का वर्णन यदि किसी संपत्ति पर सकल रकम रकम जो शुद्ध धन की कटौति योग्य शुद्ध प्रतिभूत है या उसके संबंध में उपगत है तो नहीं है, यदि कोई हो रकम वह संपत्ति विनिर्विद्ध करें

(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(ङ)
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.

2. उपर्युक्त 1(ङ) की रकमों का योग उसके द्वारा चलाए जाने वाले कारबार या बृति से संबंधित अरुओं से मिल अरु

3. अरु का वर्णन यदि किसी संपत्ति पर सकल रकम रकम जो शुद्ध धन का कटौति योग्य शुद्ध रकम प्रतिभूत है या उसके संबंध में उपगत है तो नहीं है, यदि योग्य नहीं है, यदि कोई हो वह संपत्ति विनिर्विद्ध करें

(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(ङ)
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.
		रु.	रु.	रु.

4. उपर्युक्त 3 (ङ) की रकमों का योग

5. अरुओं का संकलित मूल्य (2+4)

क. ऐसी अधिसूचित आस्तियों का विवरण, जिन पर धन-कर संबेद मही है किन्तु जिन्हें घारा 5(2) के प्रधीन शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाना है और इस प्रकार उपर्युक्त उप-भाग व और ग में दर्शित आस्तियों में सम्मिलित किया गया है।

1. आस्तियों का बर्णन	कर से छूट प्रदान करने वाली केन्द्रीय सरकार की अधिसूचना का संख्यात्मक और तारीख	मूल्य
केन्द्रीय सरकार को निश्चेप	_____	रु.
राज्य सरकारों को निश्चेप	_____	रु.
केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियाँ	_____	रु.
राज्य सरकारों की प्रतिभूतियाँ	_____	रु.
स्थानीय प्राधिकरणों की प्रतिभूतियाँ	_____	रु.
2. उपर्युक्त 1 का योग	_____	रु.
3. उपर्युक्त प्रकार की आस्तियों के मूल्य में किसी भागी-वार या सदस्यवारा धारित हित जिन्हें किसी फर्म या व्यक्तियों के संगम के शुद्ध धन में सम्मिलित किया गया है	_____	रु.
4. योग (2 + 3)	_____	रु.
क. भारत के बाहर ऐसे शुद्ध धन का विवरण जिसे शुद्ध धन में सम्मिलित किया गया है अर्थात् उपर्युक्त उप-भाग क, ख और ग में दर्शित आस्तियों में और उपर्युक्त भाग व में दर्शित आस्तियों में,		
1. आस्तियों के रूप में धारित ऐसी स्थावर संपत्ति का कुल मूल्य जो कारबार या वृत्ति की आस्तियों में भिन्न है	_____	रु.
2. कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित स्थावर संपत्ति का कुल मूल्य	_____	रु.
3. कुल मूल्य (1 + 2)	_____	रु.
4. घटाइए : छूट का कुल मूल्य	_____	रु.
5. स्थावर संपत्ति का कुल मूल्य (3-4)	_____	रु.
6. आस्तियों के रूप में धारित ऐसी जंगम संपत्ति का कुल मूल्य जो कारबार या वृत्ति की आस्तियों से भिन्न है	_____	रु.
7. कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित जंगम संपत्ति का कुल मूल्य	_____	रु.
8. कुल मूल्य (6 + 7)	_____	रु.
9. घटाइए : छूट का कुल मूल्य	_____	रु.
10. जंगम संपत्ति का कुल संकलित मूल्य (8-9)	_____	रु.
11. किसी फर्म या व्यक्तियों के संगम में उसके भागीदार या सदस्य के रूप में धारित हित का कुल मूल्य	_____	रु.
12. घटाइए : छूट का कुल मूल्य	_____	रु.

13. किसी फर्म या व्यक्तियों के संगम में उसके भागीदार
या सदस्य के रूप में धारित हित का संकलित मूल्य
(11-12) _____ रु.
14. भारत के बाहर की आस्तियों का संकलित मूल्य
(5 + 10 + 13) _____ रु.
15. घटाइए : भारत के बाहर क्रहन _____ रु.
16. भारत के बाहर के शुद्ध धन का कुल मूल्य
(14-15) _____ रु.
- छ. शुद्ध धन का विवरण
1. क. स्थावर संपत्ति का संकलित मूल्य (मद क.11) _____ रु.
 - ख. जंगल संपत्ति का संकलित मूल्य (मद ख.8) _____ रु.
 - ग. किसी फर्म या व्यक्तियों के संगम में उसके भागीदार
या सदस्य के रूप में धारित हित का संकलित मूल्य
(मद ग. 5) _____ रु.
2. आस्तियों का संकलित मूल्य (क + ख + ग) _____ रु.
 3. घटाइए . कहाँ का संकलित मूल्य (मद घ.5) _____ रु.
 4. शुद्ध धन (2-3) _____ रु.
 5. शुद्ध धन (सौ रुपए के निकटन पर गुणज तक पूर्णकित
किया गया ।)
(शब्दों में) _____ रु.
 6. शुद्ध धन की रकम जिसे उपर्युक्त 2 में सम्मिलित किया
गया है, जो किसी अन्य व्यक्ति का शुद्ध धन है _____ रु.
 7. ऐसे व्यक्ति का नाम और नांदागी

करों का विवरण

भाग-2

1. शुद्ध धन पर कर _____ रु.
2. जोड़िए : विवरणी के विलम्ब से फाइल करने पर व्याज _____ रु.
3. कुल कर और संदेय व्याज (अर्थात् 1 + 2) _____ रु.
4. घटाइए : सवतः निर्धारण पर संदर्भ कर और व्याज, यदि
कोई हो (चालान संलग्न करें) _____ रु.

कर : रु. व्याज : रु. योग रु.

संदेय की तारीख

 . . 19 .

बैंक का नाम /

शाखा

5. संदेय कर/व्याज या शोध्य प्रतिदाय (3-4) _____ रु.

भाग- ३

जानकारी जहां नियर्सिति किसी फर्म/व्यक्तियों के मंगम का भागीदार या सदस्य है।

क्रम सं.	अन्य भागीदारों/सदस्यों के लाभ अनुपात का अंश नाम	समुत्थान के धन में हित का मूल्य
(क)	(ख)	(घ)
फर्म व्यक्तियों का संगम		
भाग-4		
मंलगन दस्तावेजों/विवरणियों की सूची		
(क)	(घ)	
(ख)	(ड)	
(ग)	(च)	

1. सत्यापन

मैं (नाम स्पष्ट अक्षरों में) का/की* पुत्र/पुत्री/पत्नी (पिता/पति का नाम) सत्यनिष्ठा से धोयणा करता/करती हूँ कि इस विवरणी और इसके साथ संलग्न उपबन्धों और विवरणों में दी गई जानकारी मेरे भवोत्तम आत और विश्वास के अनुभार सही और पूर्ण है और इसमें दर्शित शुद्ध धन की रकम और अन्य विविधियों का उल्लेख सही-सही किया गया है और वे 19 के अप्रैल के प्रथम दिन को प्रारम्भ होने वाले निर्धारण वर्ष से भूसंगत मूल्योंका की तारीख से संबंधित हैं।

मैं सत्यनिष्ठा से यह और धोषणा करता/करती हूं कि

मेरे पास

उस व्यक्ति के पास जिसके लिए और जिसकी ओर से यह विवरणी दी गई है

उस व्यक्ति के पास जिसके शादू धन की बाबत में निर्धारणीय हैं

*मेरी

三

कोई अन्य ऐसी आस्ति

उक्त व्यक्ति की

उत्तरायण

नाम से या किसी श्रद्धा व्यक्ति के नाम से नहीं है जो उक्त मल्यांकन की तारीख को

三

शुद्ध धन की संगणना करने में विश्वाब में ली जानी अपेक्षित है।

रुद्र जा.

सुन्ताखोर

तारीख

१४८

*जो लाग न हो उसे काट दीजिए।

महत्वार्थ : सत्यापन पर हस्ताक्षर करने से पूर्व हस्ताक्षरकर्ता को अपना समाधान कर लेना चाहिए कि यह विवरणी संबानों में गही और पूर्ण है। जो अवधि इस विवरणी में मिल्या कथन करेगा, उसके विरुद्ध प्रति-कर अधिनियम, 1957 की धारा 35य के अधीन अभियोगन संस्थित किया जा सकेगा और वह दोपरिद्वि पर—

- (i) एक नाखूरपाए से अधिक के कर के आशयित अपवचन के मामले में, ऐसी अवधि के कठिन करावास में, जो छ मास से कम की नहीं होगा, किन्तु जो सात वर्ष तक का हो सकेगा, और जुमनि से,

(ii) किसी अन्य मामले में, ऐसी अवधि के लिए कठिन करावास से जो तीन महीने से कम का नहीं होगा, किन्तु जो ती वर्ष तक का हो सकेगा, और जमनि के दण्डनीय होगा ।

टिप्पणी

(निर्धारितों द्वारा अमलग कर लिया जाए और रद्द लिया जाए)

प्रस्तुप क

[धनकर अधिनियम, 1957/नियम 3(1) (क)]

साधारण

- (i) प्रस्तुप के केवल व्याप्तियों और प्रतिभक्त द्वितीय कुटुम्बों के लिए है।
- (ii) सभी भाग और स्तंभ इसमें नीचे दी गई रीति से भरे जाने चाहिए। यदि कोई भाग या स्तंभ लागू नहीं होता है तो उपर्या लागू नहीं होता ताकि विवरणी करें और कोई चिह्न या प्रतीक न लगाए।
- (iii) प्रत्येक पृष्ठ के नीचे इन टिप्पणी के संबंधीक (प्रबंधी में दिए गए और ऐसे 1, 2, 3) शुद्ध जन विवरणी के अपने-अपने पृष्ठों पर तत्समान मद संदर्भों के प्रतिनिवेश हैं।
- (iv) यदि विवरणी प्रस्तुप के भाग 1 में किसी मद के प्रधीन दिया गया स्थान अपवाहित पाया जाता है तो ऐसो मद को बाबत संशोधना, विवरणी प्रस्तुप में उक्त मद के प्रधीन उस प्रयोजन के लिए उपर्याप्त स्तंभों का उपयोग करते हुए पृष्ठ कागज (कागजों) पर वे और उसे विवरणी के साथ संलग्न कर दें। इस प्रकार वही गई संशोधना की राशि का योग, विवरणी प्रस्तुप में सुसंगत मद के नीचे दिए गए स्तंभों में उपर्याप्त किया जाना चाहिए। इस प्रस्तुप में मार्गी गई कोई भल्य जानकारी या स्थान की कमी के कारण पूर्ण रूप से नहीं दी जा सकती है, एक पृष्ठ कागज पर दी जा सकती है।
- (v) इन टिप्पणी में धाराओं और अनुसूचियों के प्रतिनिवेश, धनकर अधिनियम, 1957 की धाराओं और अनुसूचियों के प्रतिनिवेश हैं, और नियमों का प्रतिनिवेश धनकर नियम 1957 के नियमों के प्रतिनिवेश है।

- (vi) किसी निर्धारण वर्ष के लिए किसी प्रास्तुप का मूल्य सुसंगत मूल्यांकन की तारीख को धोखित किया जाएगा। धनकर अधिनियम, 1957 के प्रधीन किसी निर्धारण वर्ष की बाबत मूल्यांकन और नवीन से प्रायकर अधिनियम, 1961 ने धारा 3 में यथा परिवर्तित पूर्व वर्ष का अंतिम विन प्रभित्रित है। निर्धारण वर्ष में, उक्त मूल्यांकन तारीख के टीक बाद प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल से प्रारंभ होने वाली बाबत मास की प्रवधि प्रभित्रित है। इस प्रकार निर्धारण वर्ष 1991-92 के लिए

मूल्यांकन तारीख 31-3-1991 होगा, जबकि निर्धारण वर्ष 1992-93 के लिए मूल्यांकन तारीख 31-3-1992 होगी।

- (vii) नहीं को छोड़कर किसी प्रास्तुप का मूल्य, अनुसूची 3 के नियमों के आधार पर अवधारित की जाएगी। इस अनुसूची के सुसंगत नियम के प्रधीन प्रत्येक प्रास्तुप के मूल्य की गणना के ब्योर विवरणी के साथ संलग्न करने चाहिए।

इस अनुसूची के किसी नियम में यहाँ कहीं यह विनियिष्ट हो कि मूल्यांकन के समर्थन में कोई विशेष दस्तावेज विवरणी के के साथ संलग्न किया जाएगा, उसे भी संलग्न किया जाना चाहिए।

- (viii) सभी संलग्नक निर्धारितों द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिए।

पृष्ठ 1

1. यो लागू न हो उसे काट दें। यदि यह विवरणी निर्धारण वर्ष 1991-92 के लिए पहली बार काश्ल की गई है तो यह सूल विवरणी है। इसे उपदर्शित करने के लिए, “मूल” पाद को छोड़ दें और बाकी शब्दों को काट दें।

2. उस निर्धारण वर्ष को उपर्याप्त कर जिसकी विवरणी काश्ल की गई है।

उ हाँ मूल्यांकन तारीख उपर्याप्त करें।

4. यदि यह पुनरोधित विवरणी है तो वहाँ रमोड मैडाक लिखें और तथ मूल विवरणी की तारीख लिखें। उदाहरण: यदि मूल विवरणी, 15-6-91 और काश्ल की गई है जिसके विचार ते रमोड मैडाक 4210 हो है तो उसे खानों में निम्न प्रकार मे भगा जाना चाहिए।

| 4 | 2 | 1 | 0 | - | 1 | 5 | 0 | 6 | -- | 19 | 9 | 1 |

5. कर दाता को प्रायकर अधिनियम, 1961 के बाबत दिए गए स्थाई लेखा संख्या और बार्ड/सर्किन/रेज का यहाँ हवाला दिया जाएगा। यदि स्थाई लेखा संख्या नहीं दिया गया है/प्रायत नहीं किया गया है तो जी, आई, प्राय, यदि कोई है, उपर्याप्त करें। यदि बानों नहीं दिए गए हैं तो खानों की पहली पंक्ति में “नहीं दिया गया” लिखें और जहाँ निर्धारण किया गया है या किया जा सकता है वहाँ प्रायकर कार्यालय के अन संपर्क प्रधिकारी या पायतों कार्यालय में सुनिश्चित करने के पश्चात् खानों की निवाली पंक्ति में ग्राह कर बार्ड/सर्किन/रेज का उल्लेख करें।

6. प्रास्तुप का उल्लेख करने के लिए कृपया निम्नलिखित कोड नम्बर का प्रयोग करें:

अप्पि	01
हिन्दु प्रविभक्त कुटुम्ब	02

उदाहरण : यदि यह किसी व्यक्ति का भामल है तो सही कोड नम्बर 01 होगा।

7. निवासी प्रार्थित उपर्याप्त करने के लिए कृपया निम्नलिखित कोड नम्बर के प्रयोग करें :

निवासी	01
प्रनिवासी	02
निवासी किन्तु भासूली तौर पर	
निवासी नहीं	03

मूसंगत उपबंध आधार प्रधिनियम, 1961 द्वारा धारा 6 में है।

8 नाम स्पष्ट अक्षरों में लिखें। कुल का नाम पहले श्रिया गाना चाहिए।

प्रत्येक भाग के पश्चात् आना आवी छोड़ दे।

उदाहरण : गुप्ता गोपी शंकर,

[गु] प्ता [--] गो [गी] -- [शं] क [२]

9. दूरभाव रोल्या यदि कोई हो और विन कोड नहिं पूरा निवासीय और कार्यालय पते लिखें।

और 10

11. जो नाम न हो उसे काट दें। यदि (घ) का उत्तर हो तो उसके नीचे दाग गए स्थान पर मूसंगत जानकारी दें।

पृष्ठ 2 भाग।

क. स्थावर संपत्ति

I. इप गए स्तंभों में निर्धारिती द्वारा धारित सभी स्थावर संपत्तियों के ब्यारे दें जिनमें कृपया भूमि, चाहे वह भारत में या भारत के बाहर अवस्थित हो और चाहे धारा 5 के अधीन निर्धारितीय या छूट प्राप्त हों सम्मिलित हैं।

II. किसी अन्य व्यक्ति की किन्तु निर्धारितों के शुद्ध धन में सम्मिलित की जा सकने वाली ऐसी ही आस्तियों के ब्यारे यहाँ दिए जाने चाहिए। ऐसी आस्तियों निम्नलिखित हैं :--

(i) करिपय नानेदारों को या उन नानेदारों के फायदे के लिए अन्य अवित्तियों को अंतरित आस्तियों या प्रतिसंहृणीय अंतरण के अधीन अंतरित आस्तियों (धारा 4(1) (क))

(ii) किसी थर्म में भागीदारों के फायदों के लिए सम्मिलित अवयस्क बालक का हित (धारा 4)(1) (ख)

(iii) निर्धारिती की 31-12-1969 के पश्चात् हिन्दू प्रविभक्त कुटुम्ब की संपत्ति में अंपरिवर्तित संपत्ति (धारा 4) (1क)

(iv) लेखा में दर्ज करके दात किया गया धन (धारा 4) (5क)

III. यदि निर्धारिती किसी सहकारी आवास सोसाइटी का सबस्थ है तो किसी भवत या आवंटित या पटुधूत फैट का मूल्य भी विवरणी के इस उप-भाग में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

IV. स्थावर संपत्ति को प्रत्येक मद को पृथक रूप से एक के नीचे दूसरे के रूप में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। यदि स्थावर संपत्ति में

भूमि या भारत का कोई अधिकार ममिलित है तो मध्येतर प्रक्रमी और उसकी सांसारा स्पष्टन कितनी जानी चाहिए।

V. स्थावर संपत्ति का मूल्य, अनुसूची 3 के नियम 1 में 8, 20 और 21 के अनुसार घोषित किया जाना चाहिए। जहाँ आस्तियों का कारबार वाले आस्तियों के स्वयं में धारित किया जाता है जिसके लिए विवाह निर्मित रहा में यहाँ जाता है, वहाँ मूल्यांकन, इस अनुसूची के नियम 14 के अनुसार किया जाना चाहिए।

कारबार या वृत्ति की आस्तियों से भिन्न आस्तियों के रूप में धारित

1. (क) स्थावर संपत्ति का वर्णन और अर्वास्थार्थित ऐसी हीरी चाहिए जिसमें कि संपत्ति और इसको सीमांशों की स्पष्ट स्थिति में पहचान की जा सके।

(ख) अनुसूची 3 के मूसंगत नियम के उपर्याप्त आधार पर यथा संगठित स्थावर संपत्ति का मूल्य यहाँ उपदर्शित करें।

2. 1(ख) में उल्लिखित रकम की कुल राशि यहाँ उपदर्शित करें।

3. मद 1 में दर्शित कितु धारा 5(3) के करिपय खण्डों के अधीन छूट प्राप्त स्थावर संपत्ति का यहाँ उल्लेख करें। ये निम्नलिखित हैं :--

(i) भारत में किसी धर्मार्थ लोक प्रयोजन या धार्मिक प्रकृति के प्रयोजन के लिए किसी न्यास या अन्य विधिक बाध्यता के अधीन धारित कोई संपत्ति। यह छूट किसी ऐसी संपत्ति के संबंध में नहीं है जो न्यास द्वारा चलाए जा रहे किसी कारबार का भाग है। तथापि यह प्रतिषेध उसमें उल्लिखित करिपय छूट के अधीन रहते हुए हैं... खण्ड (i)

(ii) किसी हिन्दू प्रविभक्त कुटुम्ब के सदस्य के रूप में उसकी सहवायिकी संपत्ति में हित।

(iii) एक भवन जो किसी तत्कालीन देशी राज्य के भूतपूर्व शासक के नासकीय निवास के रूप में मान्यता प्राप्त है जो कि उसको अधिभोग में है... खण्ड (iii)

(iv) निर्धारिती का एक घर या घर का भाग खण्ड (iv) यह छूट और धारा 5(क) में उल्लिखित करिपय जंगम आस्तियों की बाबत छूट, पांच लाख रुपए की समग्र अधिकतम छूट के अधीन रहते हुए है।

(v) निर्धारिती का लघु निवास एक (जिसका क्षेत्र 80 वर्ग मीटर से अधिक न हो) और जो 1-4-1976 के पश्चात् निर्मित किया गया गया हो तथा उससे संलग्न भूमि। यह छूट, निर्माण के पूरा होने की तारीख ले लेकर पांच निर्धारण वर्षों को लागू है। खण्ड (iv)

(vi) निर्धारिती का लघु निवास पाकक (जिसका श्वेत 80 वर्ग मीटर में अधिक नहीं हो) और निर्धारिती के किसी संयंत्र का औद्योगिक उपकरण के कर्मचारियों के निवास के प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाता है खण्ड (XXXक)

और धारा 2(ड.) के उपबंधों के अधीन कृषि भूमि, धन-कर अधिनियम के प्रयोजनों के लिए कोई आस्ति नहीं है। नथापि इसको मद 1 में दर्शित करने के पश्चात् इसके छूट का दावा करके अपवर्जित कर देना चाहिए।

और वह भी कि धारा 6 के उपबंधों के अधीन किसी ऐसे व्याटिकी की दस्ता में जो भारत का नागरिक नहीं है या काई ऐसा व्याटिकी हिन्दू अविभक्त कुट्टम जो भारत में निवासी नहीं है या निवासी है किन्तु आम तौर पर भारत वा निवासी नहीं है, भारत के बाहर अवस्थित आस्तियों का मूल्य उसके कुराधन में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। अतः ऐसी आस्तियों को यदि कोई है ऊपर मद 1 में दर्शित करने के पश्चात् इसका यहां छूट के रूप में दावा करना चाहिए।

4. मद 3 में दावा की गई छूट की राशि का योग यहां उपर्युक्त करना चाहिए।

5. बाकी को यहां उपर्युक्त करें (जैसे 2-4)
कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित

6. स्वतंत्रधारी के रूप में निर्धारिती द्वारा चलाए जा रहे कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित स्थावर संपत्ति के निम्नलिखित व्याप्रे यहां उपर्युक्त स्तंभों में दें :—

- (क) संपत्ति का वर्णन और अवस्थिति ऐसी होनी चाहिए जिसमें कि संपत्ति और उसकी सीमाओं की स्पष्ट रूप में पहचान की जा सके।
- (ख) अनुसूची 3 के मुसंगत नियम के उपबंधों के आधार पर संगणित संपत्ति का मूल्य यहां विनिर्दिष्ट करें।

मूल्यांकन तारीख तक के तुलनपत्र या शेष परीक्षण पत्र का एक प्रति और लेखा परीक्षक की रिपोर्ट की एक प्रति ग्रहि कोई है, संलग्न की जानी चाहिए।

जैसा कि पहले उपर्युक्त किया गया है, यहां आस्तियों का कारबार की आस्तियों के रूप में धारण किया जाता है। जिसके लिए नियमित रूप से लेखा रखा जासा है, वहां अनुसूची 3 का नियम 14 मूल्यांकन के प्रयोजनों के लिए लागू होगा। नथापि नियम 14(2)(घ)(iii) के अंतर्गत आने वाली आस्तियों के बारे और मूल्य, जिसके संबंध में इस अधिनियम के अधीन धन-कर संदेय नहीं है, पहले यहां दर्शित किया जाना चाहिए और तब इस भाग की मद सं. 8 में छूट के रूप में दावा करना चाहिए।

7. 6(ब्र) में उल्लिखित रकम की कुल राशि यहां उपर्युक्त करें।

8. मद सं. 6 में दर्शित किन्तु धारा 2(ड.) के अधीन अपवर्जित और धारा 5(1) वार पारा 6 के अधीन छूट प्राप्त स्थावर संपत्ति का वर्णन यहां करें। उपलब्ध छूट वही है जो ऊपर मद 3 में उल्लिखित है।

महत्वपूर्ण टिप्पणी—

कृपया यह मुनिपिचल कर लें कि ऊपर मद 3 के रकम में (4) में उल्लिखित किसी गृह की बाबत छूट का दावा केवल एक गृह की बाबत या नो ऊपर मद 3 में या यहां किया गया है। धारा 5 (1क) में उल्लिखित करिपय जंगम आस्तियों की बाबत छूट के साथ जो ऊपर भाग ख की मद 6 में उल्लिखित छूट प्राप्त जंगम आस्तियों के दूसरे प्रबंग के रकम में (1) से (17) में प्रगणित है, इस उपभाग में एक गृह की बाबत छूट का दावा भी (इन टिप्पणी के पृष्ठ 7-8 निर्दिष्ट करें) पांच लाख रुपए से अधिक नहीं होना चाहिए। नथापि यह इन टिप्पणी के पृष्ठ 7-8 में उल्लिखित करिपय मामलों में कुछ अपवादों के अधीन रहते हुए है। और धारा 5 (1क) द्वारा अधिरोपित पांच लाख रुपए की यह समग्र अधिकतम सीमा, ऊपर प्रकृति की जंगम या स्थावर आस्तियों में जो फर्म या एओपी के स्वामित्व में है, किसी भागीदार या सदस्य के हित के आनुपातिक शेयर को भी लागू होगी (इन टिप्पणी के पृष्ठ 9 पर उपभाग की मद 3 में की गई चर्चा देखें)।

9. ऊपर मद 8 में दावा की गई छूट की कुल राशि यहां उपर्युक्त की जानी चाहिए।

10. बाकी (जैसे 7-9) का उल्लेख यहां करें।

11. स्थावर संपत्ति का कुल मूल्य यहां विनिर्दिष्ट करें (जैसे 5+10)

पृष्ठ 3

ख. जंगम संपत्ति

(i) निर्धारिती द्वारा धारित सभी जंगम संपत्तियों के बारे दिए गए स्तंभों में वे, जिसमें वे धारा 2(ड.) में उल्लिखित संपत्तियां भी सम्मिलित हैं जो धन-कर अधिनियम के प्रयोजनों के लिए आस्तियों नहीं हैं, चाहे वे भारत में या भारत के बाहर अवस्थित हैं, चाहे वे धारा 5 के अधीन निर्धारणीय हैं या छूट प्राप्त है और चाहे धारा 5(2) के अधीन उन पर धन-कर संदेय है या संदेय नहीं है।

(ii) किसी अन्य व्यक्ति की किन्तु धारा 4 के अधीन निर्धारिती के शुद्ध धन सम्मिलित की जा सकते वाली वैसी ही आस्तियों का मूल्य यहां दिया जाना चाहिए। ऐसी आस्तियों की प्रकृति वैसी ही है जैसी कि इन नियमों के टिप्पणी के उपभाग के अम संस्कारण II में उल्लिखित है।

(iii) जंगम अप्रिम का मूल्य अनुसारे 3 के नियम 1, 2, 9 और 10 और 17 से 31 के अनुसार घोषित किया जाना चाहिए। जहाँ आस्तियाँ, रारबार की आस्तियाँ के रूप में रखी जाती हैं, जिनका लेखा नियमित रूप से रखा जाता है वहाँ मूल्यांकन इस अनुसूची के नियम 14 के अनुसार किया जाना चाहिए।

कारबार या बृति की आस्तियों से भिन्न रूप में ध्वनि आस्तियाँ।

1. (i) हाथ तकनी की राशि यहाँ उपर्युक्त करें।

(ii) निर्धारिती के प्रत्येक रुपण या 50,000/- रु. और अधिक के अग्रिमों को विनिर्दिष्ट करने के लिए यहाँ दिए स्थान का उपयोग करें।

50,000/- रु. से कम के अन्य रुपण इकट्ठे दर्शित किए जा सकते हैं।

रुपण या अग्रिम की राशि जिसमें मूल्यांकन की तारीख को उस पार उद्भूत व्याज सम्प्लिल दोनों चाहिए, जो प्राप्त नहीं हुई है और जो उस तारीख को बकाया है।

निर्धारिती के 50,000/- रु. और ऊपर के प्रत्येक रुपण या अग्रिम की बाबत निम्नलिखित जानकारी विवरणी के साथ दें और संलग्न करें:—

अग्रिम की बाबत निम्नलिखित जानकारी विवरणी के साथ दें और संलग्न करें:—

क्रम सं.	राशि	उस अवक्ति का नाम जिसके द्वारा राशि देय	क्या रुपण है या अग्रिम है	
1	2	3	4	
अग्रिम की तारीख	रुपण अग्रिम का ढंग	ब्याज की दर	प्रतिभूति की यदि कोई है, यदि कोई है किस्म	टिप्पणियाँ
5	6	7	8	9

(iii) यहाँ दिये गये स्तंभों में बैक का नाम, उसकी शाखा, लेखा संख्यांक, लेखा की प्रकृति उपर्युक्त करें जैसे क्या यह बचत बैक खाता या कोई चालू खाता, आवर्ती निशेप खाता सावधि निशेप खाता आदि है और प्रत्येक खाते में राशि।

(iv) यहाँ स्वर्ण, रजत, प्लेटिनम या अन्य बहुमूल्य धातु का रूप, इसका ग्राम में कुल भार और शुद्धभार और अनुसूची 3 के नियम 20 के अनुसार उसका मूल्य उपर्युक्त करें।

“स्वर्ण” से किसी भी आकृति या स्फ का नौ केरेट में अन्यून शुद्धना का स्वर्ण, जिसके अन्तर्गत उसकी मिश्रधातु भी है, अभिप्रेत है चाहे वह अपने मूल रूप में हो, गलाया हुआ हो या पुनः गलाया हुआ हो या गढ़ा हुआ हो या अनगढ़ा हुआ हो, और इसके अन्तर्गत कोई भी स्वर्ण-मुद्रा (चाहे वह वैध मुद्रा हो या नहीं), कोई स्वर्ण आभूषण और स्वर्ण की अन्य वस्तुएँ भी हैं (अनुसूची-3 का नियम 2)। परन्तु स्वर्ण आभूषणों का व्यूह नीचे मद (5) के सामने दिया जाता चाहिए। नीचे केरेट से न्यून शुद्धता का स्वर्ण “अन्य” के नीचे मद (iv) (घ) में उपर्युक्त किया जाना चाहिए।

(5) आभूषणों के मदवार और स्तंभ (क) से (घ) में दिये जाने चाहिए। इस प्रकार (क) में स्वर्ण आभूषणों के अन्तर्गत ऐसे स्वर्ण आभूषण आएंगे जिनमें हीरे या अन्य बहुमूल्य या अद्वं बहुमूल्य रत्न जड़े हैं। इसी प्रकार रजत के हीरों के आभूषण (ख) में वर्णित किये जायेंगे जब कि प्लेटिनम के हीरों के आभूषणों (ग) में दर्शित किए जायेंगे। बहुमूल्य या अद्वं बहुमूल्य रत्न जो स्वर्ण या रजत आभूषणों या किसी अन्य बहुमूल्य धातु के आभूषणों का भाग नहीं हैं किन्तु उन्हें अलग रखा जाता है या किसी फर्नीचर, बर्तन या अन्य वस्तु में जड़ा गया है या किसी पहने जाने वाले परिधान में सिले हैं, (ग) में दर्शित किये जाने चाहिए।

आभूषणों का मूल्यांकन अनुसूची-3 के नियम 18 और 19 के अनुसार किया जाना चाहिए। आभूषणों के मूल्यांकन के समर्थन में विवरणी के साथ विहित प्रूफ संलग्न करना होगा:—

(क) जहाँ मूल्यांकन की तारीख को आभूषण का मूल्य 5 लाख रुपये तक है वहाँ निर्धारित ब्लार हस्ताक्षरित, नियम 13(ग) में विहित प्रूफ सं. 0-8क में वर्णन, या

(ख) जहाँ मूल्यांकन की तारीख को आभूषण का मूल्य 5 लाख रुपये से अधिक है वहाँ नियम 8घ में विहित प्रूफ सं. 0-8 में रजिस्ट्रीकूत मूल्यांकक की रिपोर्ट।

टिप्पण :—‘आभूषण’ पद की परिभाषा अनुसूची-III के नियम 2 में दी गई है।

४३—४

(6) कोट किए गए/कोट न किए गए डिबेंचर के कंपनी वार और यहा दिए गए संबंधित स्तंभों में उपर्युक्त किए जाने चाहिए। कोट किए गए डिबेंचर का मूल्य नियम 9 के अनुसार अवधारित किया जाता है और कोट न किए गए डिबेंचर का मूल्य अनुसूची-III के नियम 20 के अनुसार अवधारित किया जाता है।

(vii) कोट किए गए/कोट न किए गए अधिमानी शेयरों के कंपनीवार और यहां दिए गए स्तंभों में उपर्युक्त किए जाने चाहिए। कोट किए गए अधिमानी शेयर का मूल्य नियम 9 के अनुसार अवधारित किया जाता है और कोट न किए गए शेयर का मूल्य अनुमूल्य-III के नियम 10 के अनुसार अवधारित किया जाता है।

(viii) कोट किए गए साधारण शेयरों के कंपनीवार और यहां दिए गए स्तंभ में उपर्युक्त किए जाने चाहिए। कोट किए गए साधारण शेयर का मूल्य नियम 9 के अनुसार या निर्धारिती के विकल्प पर अनुमूल्य-III के नियम 9 के अनुसार अवधारित किया जाता है। पश्चात्कर्ती दशा में विवरणी के साथ मूल्यांकन के समर्थन में किसी चार्टिंग एकाउंट या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 226(2) के आवार पर कंपनी के लेखा परीक्षक के रूप में नियुक्त किए जाने के हकदार किसी व्यक्ति का प्रमाणपत्र संग्रह किया जाएगा।

(ix) कोट न किए गए साधारण शेयर के कंपनीवार और यहां दिए गए स्तंभों में उपर्युक्त किए जाने चाहिए। कोट न किए गए साधारण शेयरों का मूल्य अनुमूल्य-III के नियम 11 से 13 तक के अनुसार अवधारित किया जाता है परन्तु यह इस बात पर निर्भर करेगा कि कोट न किया गया साधारण शेयर किसी विनिधान कंपनी से भिन्न किसी कंपनी में या किसी विनिधान कंपनी में या किसी अंतःपाशी कंपनी में है।

टिप्पण :—“डिबेंचर”, “अधिमानी शेयर”, “साधारण शेयर”, “कोट किया गया शेयर”, “कोट किया गया डिबेंचर”, “कोट न किया गया शेयर” और “कोट न किया गया डिबेंचर” पदों की परिभाषाएं अनुमूल्य-III के नियम 2 में दी गई हैं।

(x) यहां दिए गए स्थान का उपयोग अन्य जंगम आस्तियों के बौरे देने के लिए किया जाना चाहिए, जैसे :—

- (क) वार्षिक अधिकार
- (ख) किसी बीमा पालिसी में निर्धारिती का अधिकार या हित।
- (ग) किसी पेटेंट या प्रतिलिप्य अधिकार के अधीन निर्धारिती का अधिकार।
- (घ) वाहन (बौरे दें)।
- (ङ) फर्नीचर, गृहरथी के बर्तन और अन्य वर्तुएं (बौरे दें)।
- (च) निर्धारिती को अपनी वृत्ति या व्यवसाय चलाने में समर्थ बनाने के लिए आवश्यक औजार और उपकरण (व्यवसाय या वृत्ति का उल्लेख कीजिए)।

- (छ) सरकार द्वारा बनाई गई अनेक स्कीमों के अधीन निषेप।
- (ज) लोक बचत प्रमाणपत्रों या डाकघर के वार्षिकी प्रताणपत्रों में विनिधान।
- (झ) सरकार द्वारा या अन्य निकायों द्वारा जैसे पब्लिक सैक्टर कंपनी, निगम आदि द्वारा जारी किए गए अनेक वंधपत्र।
- (ञ) सरकारी प्रतिभूतियां।
- (ट) भारतीय यूनिट ट्रस्ट या आय-कर अधिनियम की धारा 10 (23क) के अधीन विनिर्दिष्ट पारस्परिक निधि के यूनिट।
- (ठ) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक में निषेप।
- (ड) किसी विवि द्वारा या उसके अधीन भारत में गठित आवास प्राधिकरणों में निषेप।
- (ढ) सहकारी सोसाइटियों में निषेप।
- (ण) सहकारी सोसाइटियों में शेयर।
- (त) अनिवार्य निषेप सीटर (आय-कर दाता) अधिनियम, 1974 के अधीन निषेप।
- (थ) स्थानीय प्राधिकरणों की प्रतिभूतियां, बंधपत्र और डिवेंचर।
- (द) निर्धारिती को शौद्ध कोई अन्य रकम जो असंदर्भ रह गई हो।
- (ध) बीमा पालिसियों की रकम जो शौद्ध और देश हो किन्तु जिसका संदाय नहीं किया गया हो।
- (न) नकद संदाय न किया गया लाभांश, व्याज आदि।
- (प) ऊपर की मदों में सम्मिलित न की गई अन्य आस्तियां।

2. यहां शब्द 1 (i) से 1 (x) का कुल योग उपर्युक्त करें।

पृष्ठ 5

कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित

3. यहां दिए गए स्तंभों में स्वत्वधारी के रूप में निर्धारिती द्वारा चलाए जाने वाले कारबार या वृत्ति की आस्तियों के रूप में धारित जंगम संपत्तियों के निम्नलिखित बौरे दीजिए :—

- (क) कारबार या वृत्ति की आस्तियों का वर्णन। इनमें से कुछ आस्तियां यै हो सकती हैं :—
 - (i) संयंत्र और मणीनरी।
 - (ii) फर्नीचर और फिटिंग।
 - (iii) पेटेंट प्रधिकार, प्रतिलिप्यप्रधिकार आदि।
 - (iv) यान।

- (v) मण्डार, पुजे, और जार और उपकरण।
 - (vi) व्यापार स्टाक।
 - (vii) विधि देनदार।
 - (viii) निर्धारिती डाग वेय अृण और उधार।
 - (ix) हाथ-नहाई और बैक नकदी।
 - (x) सभी अन्य आस्तियां।
- (म) अनुगूची-III के मुमंगत नियम के उपबंधों के आधार पर संगणित प्रथेक आस्ति का मूल्य यहां उपर्युक्त करें।

मूल्यांकन की तारीख को तुलनपव या शेष परीक्षा की एक प्रति और लेखा परीक्षा रिपोर्ट, यदि कोई हो, की एक प्रति संलग्न कीजिए।

जैसा कि ऊर उल्लेख किया जा चुका है जहां आस्तियां नारागार की ऐसी आस्तियों के रूप में धारित की जाती है जिनके लिए लेवे नियमित रूप से रखे जाते हैं वहां मूल्यांकन के प्रयोजन के लिए अनुसूची-III का नियम 14 लागू होगा। परन्तु इस अनुसूची के नियम 14 (2)घ) (iii) के अन्तर्गत प्राने वाली ऐसी आस्तियों के ब्योरे और मूल्य, जिनकी वाबन धनकर इस अधिनियम के अधीन सदैय नहीं हैं पहले यहां दर्शित किया जाना चाहिए और आद में इस उपभाग की मद सं. 6 में छूट प्राप्ति का दावा किया जाना चाहिए।

4. यहां 3(म) में उल्लिखित रकमों की संकलित राशि उपर्युक्त कीजिए।

5. यहां 2 और 4 की रकमों का योग उपर्युक्त कीजिए।

6. यहां उपर्युक्त मद 1 और 3 में दर्शित जंगम संपत्ति, जिसे धारा 5(1) के अधीन छूट प्राप्त है, का वर्णन दीजिए। निम्नलिखित प्रकार की जंगम संपत्तियों की वाबन छूट का भी दावा कीजिए:—

- (i) धारा 2 (उ) के उपबंधों के अधीन जीव-जन्म, व्यापिकी का अधिकार, इस अधिनियम में वर्णित कुछ शर्तों के अध्यधीन रहने हुए और केवल छह वर्ष में अनधिक की अवधि के लिए संपत्ति में कोई हित धनकर अधिनियम के प्रयोजनों के लिए शुद्ध आस्तिया नहीं है। अतः उन्हें, यथास्थिति, मद 1 या 3 में दर्शित के पश्चात् यहा छूट का दावा करने हुए अवर्जित कर दिया जाना चाहिए।
- (ii) धारा 6 के उपबंधों के अधीन, भारत का नागरिक न होने वाले व्यष्टि के प्रथमा भारत में निवासी न होने वाले या भारत में निवासी किन्तु मामूली तौर पर निवासी न होने वाले व्यष्टि या हिन्दू अविभक्त कृष्ण की रूपा में

निम्नलिखित आस्तियों का मूल्य उसके गृह धन में सम्मिलित नहीं किया जाएगा:—

- (क) भारत के दावा स्थित आस्तिया।
- (ख) किसी भी दशा में, किसी उधार या अृण के रूप में, जिसका निर्धारिती लेनदार है, भारत में आस्तिया जड़ी ऐसे उधार या अृण पर संदेय व्याज की आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 10 के अधीन छूट प्राप्त है।

अतः ऐसी आस्तियों को, यदि कोई हो, यथास्थिति, मद 1 या 3 में दर्शित के पश्चात् उनकी वाबन यहां छूट का दावा किया जाना चाहिए।

जहां तक धारा 5 (i) के अधीन उपलम्ब छूटों का सम्बन्ध है, ऐसी छूट प्राप्त आस्तियों को व्यापक रूप में 2 प्रवर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है:—

- (क) आस्तियां जो पांच लाख रुपा की ममूर्ण अधिक राशि भीमा के बिना छूट प्राप्त हैं।

- (ख) आस्तियां, जो आस्तियों के ऐसे समूह में संबंधित हैं जिनके संबंध में पांच लाख रुपा भी ऐसी ममूर्ण अधिकराशि भीमा है जिस तक उपलम्ब में आस्तियों को छूट दी जा सकती है।

पहले प्रवर्ग में आने वाली आस्तियां धारा 5(i) के अनेक खंडों में प्रमाणित हैं। ये इस प्रकार हैं—

- (i) भारत में पूर्त या धार्मिक वक्फी के फिली गार्य-जनिक प्रयोजन के लिए ताजा या अन्य विधिक वाध्यता के अधीन धारित आस्तियां। यह छूट ऐसी किसी संपत्ति की वाबन उत्तमरूप नहीं है जो ऐसे व्यास व्याग किए जाने वाले कान्वार का भाग रूप हैं। परन्तु यह प्रतिपेश उसमें वर्णित कुछ अपवादों के अध्यधीन है... खंड (i)।

- (ii) किसी हिन्दू अविभक्त कृष्ण की सहदायिकी संपत्ति में उसके मदमें रूप में मिन... खंड (ii)।

- (iii) प्रतिलिप्य अधिकार या किसी पेटेन्ट के रचयिता या आविष्कर्ता के रूप में स्वशिकार उसके द्वारा धारित किसी प्रतिलिप्य अधिकार या पेटेन्ट के अधीन रचयिता या प्राविष्कर्ता के अधिकार... खंड (v)।

- (iv) किसी वीमा पालिसी में धन के देय और संदेय होने से पहले उस वीमा पालिसी में अधिकार या हित परन्तु यदि किसी ऐसी वीमा पालिसी की दशा में जिसमें प्रीमियम संदाय की रकम अवधि इस वर्ष में कम हो, छूट प्राप्त। अनुपाततः कम कर दी जाएगी.... खंड (vi)।

- (v) किसी नियोजक के अधीन रिछली सेवाओं के संबंध में पैण्डन या अन्य जीवन व्यष्टिकी पाने का अधिकार.... खंड (vii)।

....., पहनने के वस्त्र, रसद और अन्य वस्तुएं जो निजी या घरेलू उपयोग के लिए आशयित हैं किन्तु इसके अन्तर्गत आभूषण नहीं हैं। यदि कोई फर्मिचर गृहस्थी के बर्तन, पहनने के वस्त्र या कोई अन्य वस्तु सोना, चांदी रंगीन सोना या किसी अन्य बहुमूल्य धातु या उनकी किसी मिश्र धातु की पूर्णतः या भागतः बनी हुई है या उनमें ये धातुएं अन्तर्विष्ट हैं या उनमें कोई बहुमूल्य या अर्द्ध बहुमूल्य रत्न जुड़े गए हैं या उनका काम किया गया हो या मिले गए हों, तो वे छूट प्राप्त नहीं हैं.....

निजी वाहन भी (उदाहरणार्थ मोटर, स्कूटर, नीका, वायुयान आदि) को केवल 75,000 रु. की सीमा तक छूट प्राप्त है। उनके इस रकम से अधिक मूल्य को शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाएगा.....खंड (viii)

(vii) वे कृषि और उद्यान, औजार, उपकरण और उपस्कर जो उसमें वर्णित कृषि/उद्यान प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं.....खंड (ix)

(viii) निर्धारिती की वृत्ति या व्यवसाय को चलाने के लिए आवश्यक औजार और उपकरण। परन्तु वे केवल 50,000 रु. तक ही छूट प्राप्त हैं। उनके इस रकम से अधिक मूल्य को शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाएगा.....खंड (x)

(ix) ऐसे विधि व्यवसायियों, चिकित्सा व्यवसायियों, दृष्टिनियरों, वास्तुविदों और लेखाकारों की वशा में, जो लेखाकर्म की नकदी प्रणाली के आधार पर लेखावहियां नियमित रूप से रखते हैं, देय किसी वृत्तिक फीम की रकम.....खंड (x)

(x) ऐसे उपकरणों और अन्य साधित जिनका प्रयोग वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए किया जाना है.....खंड (xi)।

(xi) ऐसी कोई कलाकृतियां, पुरातत्व, विज्ञान या कला विषयक संग्रहण, पुस्तकों या हस्तलेख, जो निर्धारिती की हैं और विक्रय के लिए आशयित नहीं हैं। परन्तु आभूषण को, महां तक कि कुलागत वस्तुओं को भी छूट प्राप्त नहीं है.....खंड (xii)

(xii) कोई रेखांचित्र, रंगचित्र, फोटो चित्र, प्रिट और कोई अन्य कुलागत वस्तुएं जो उपर्युक्त खंड (xi) के अन्तर्गत नहीं आती और विक्रय के लिए आशयित नहीं हैं। परन्तु आभूषण को, महां तक कि कुलागत वस्तुओं को भी छूट प्राप्त नहीं है.....खंड (xiii)

(xiii) भूतपूर्व शासकों के कब्जे में आभूषणों जिन्हें कुलागत वस्तुओं के रूप में मान्यताप्राप्त हो, उनमें वर्णित कतिपय शर्तों के अध्यधीन रहते हुए.....खंड (xiv)

(xiv) 6-1/2 प्रतिशत स्वर्ण बंधपत्र, 1977, 7 प्रतिशत स्वर्ण बंधपत्र, 1980 और राष्ट्रीय रक्षा स्वर्ण बंधपत्र, 1980.....खंड (xiv)

(xv) विशेष वाहक बंधपत्र, 1991.....खंड (xiv-x)

(xvi) किसी ऐसे व्यष्टि, जो भारत का नागरिक है, या भारतीय उद्भव के ऐसे व्यष्टि की दशा में जो भारत का निवासी नहीं है (अर्थात् कोई अनिवासी भारतीय (एन.आर.आई.) कोई "विदेशी मुद्रा" आस्ति। "विदेशी मुद्रा आस्ति" से निम्नलिखित आस्तियां अभिप्रेत हैं जिन्हें सम्पर्कर्तनीय विदेशी मुद्रा में अर्जित या क्रय या प्रतिशुल्क किया गया है:—

(क) भारतीय कंपनी के शेयर।

(ख) भारतीय पञ्चिक कंपनी द्वारा जारी किए गए डिवेंचर।

(ग) किसी भारतीय पञ्चिक कंपनी में निक्षेप।

(घ) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियां।

(उ.) ऐसी अन्य आस्तियां जिन्हें इस प्रयोजन के लिए अधिसूचित किया जाए।

उपर्युक्त आस्तियों की बाबत छूट सिवाय भारतीय कंपनी में शेयरों के, जो किसी ऐसे अनिवासी भारतीय को उपलब्ध हों उसके भारत का निवासी होने के पश्चात् भी बनी रहेंगी.....खंड (xvi-g) और (xvi-gक)।

यदि अनिवासी भारतीय स्थायी रूप से निवास करने के आशय से भाग्त वापस आ गया है तो उसके द्वारा भारत में लाई गई धनराशि और आस्तियों या उसके वापसी की तारीख के ठीक पूर्ववर्ती एक वर्ष के भीतर और तत्पश्चात् किसी भी समय ऐसी धन-राशियों से अर्जित की गई आस्तियों की बाबत सात उत्तरवर्ती निर्धारण वर्षों के लिए उसे धन-कर की छूट उपलब्ध होगी.....खंड (xxxiii)।

(xvii) पूंजी विनिधान बंधपत्र जिन्हें केन्द्रीय सरकार के इस निमित्त अधिसूचित करे.....खंड (xvi-h)

(xviii) किसी पञ्चिक सेक्टर कंपनी के कतिपय अधिसूचित डिवेंचर जिन्हें 1-6-1988 से पहले जारी किया गया था....खंड (xvi-j.) और धारा 5 (1क) का दूसरा परतुक।

(xix) राहत बंधपत्र जिन्हें केन्द्रीय सरकार इस निमित्त अधिसूचित करें.....खंड (xvi-n)।

(xx) असंप्रत्यावर्तनीय बंधपत्र जिन्हें केन्द्रीय सरकार ने आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 10 (15) (ii-घ) के अधीन आय-कर से छूट के प्रयोजनों के लिए अधिसूचित किया है और

जिनका किसी अनिवासी भारतीय ने विदेशी मुद्रा में क्रय किया है। यह छूट निम्नलिखित व्यष्टियों को भी उपलब्ध है :—

- (क) अनिवासी भारतीय का नामनिर्देशिती या उत्तरजीवी।
- (ख) कोई व्यष्टि जिसे ऐसे अनिवासी भारतीय से दान के रूप में बंधपत्र प्राप्त हुए हों।
- (ग) कोई व्यष्टि जो बंधपत्र के क्रय के समय अनिवासी भारतीय है किन्तु किसी पश्चात्यर्ती वर्ष में भारत का निवासी हो जाता है.....खंड (xvi)

(xxi) किसी वेतनभोगी कर्मचारी की दशा में उसके नियोजक द्वारा गर्भी गयी भविष्य निधि, जिसको भविष्य निधि अधिनियम, 1925 लागू होता हो या जो आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 2(38) के अर्थात्तर्गत भविष्य निधि के रूप में मान्यताप्राप्त हो, में जमा अतिशेष.....खंड (xvii)

(xxii) किसी व्यष्टि के/की दशा में लोक भविष्य निधि स्कीम, 1965 के अधीन किसी लोक भविष्य निधि में जमा अतिशेष.....खंड (xviii)

(xxiii) केन्द्रीय सरकार द्वारा संस्थित या अनुमोदित किसी वीरता या योग्यता पुरस्कार के अनुसरण में सरकार में प्राप्त संपत्तिखंड (xviii)

(xxiv) कोई पदक द्राफी या वस्तु-रूप में पुरस्कार जो सरकार से, किसी विष्वविद्यालय से या, ऐसे विष्वविद्यालय में संबद्ध किसी संस्था में या किसी अन्य संस्था, संगम या निकाय से, जो इस खंड के प्रयोजनों के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित है, किसी भी क्षेत्र में किसी उपलब्धि, कृति या योगदान के लिए प्राप्त हुआ है.....खंड (xviii)

(xxv) किसी ऐसी कंपनी में साधारण शेयर जो भारत में ऐसे किसी औद्योगिक उपक्रम को चला रही है जो आयकर अधिनियम की नींवी अनुसूची में विनिर्विष्ट किसी वस्तु या चीज का विनिर्माण या उत्पादन कर रही है जहां ऐसे शेयर 28 फरवरी, 1975 के पश्चात् कंपनी द्वारा जारी की गई साधारण अंश पूँजी के आरम्भिक निर्गम का भाग है। यह छूट ऐसे साधारण शेयरों के निर्गम की तारीख के बावजूद उत्तर वर्ती निर्वारण वर्षों की अवधि के लिए उपलब्ध है.....खंड (xxv)

(xxvi) आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80ग्राम में निर्विष्ट राष्ट्रीय बचत योजना के अधीन निक्षेप.....खंड (xxvii)

(xxvii) जीवन दीमा निगम की जीवन धारा और जीवन अध्यय पालियों में, जिन्हें आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80ग्राम के अधीन अधिसूचित किया गया है, अधिकार या हित.....खंड (xxviii)

(xxviii) किसी सेवा निवृत्ति सरकारी कर्मचारी द्वारा सेवा निवृत्ति के कारण उसे देय धन में से धन का किसी अधिसूचित

स्कीम में निर्देश। यह छूट 1990-91 निर्धारण वर्ष में उपलब्ध है। यह छूट निर्धारण वर्ष 1991-92 से पब्लिक सेक्टर कंपनियों के कर्मचारियों को भी उपलब्ध होगी.....खंड (xxviii)

(xxix) किसी मकान के प्रावंटन या पट्टे के लिए किसी सहकारी आवास सोसाइटी के सदस्य के रूप में किसी आवास निर्माण योजना के अधीन जमा की गई धन-राशि.....खंड (xxx)

(xxx) किसी ग्रेसी कंपनी में साधारण शेयर जो भारत में ऐसे किसी औद्योगिक उपक्रम को चला रही है जो अनुसूची-II में विनिर्विष्ट किसी वस्तु या चीज का विनिर्माण या उत्पादन कर रही है या जो किसी विहित प्राधिकारी द्वारा विनिर्विष्ट उसके उत्पादन की किसी निश्चित प्रतिशतता का निर्यात कर रही है, किसी ऐसे व्यष्टि द्वारा धारित साधारण शेयर जो मूल्यांकन की तारीख को समाप्त होने वाले वर्ष के दौरान भारत का नागरिक और अनिवासी भारतीय है। ऐसे शेयर 31-3-1976 के पश्चात् कंपनी द्वारा निर्गमित साधारण अंशपूँजी के प्रारम्भिक निर्गम का या किसी औद्योगिक उपक्रम के विस्तार या विधिविकरण के प्रयोजनों के लिए 31-3-1976 के पश्चात् कंपनी द्वारा निर्गमित साधारण अंश पूँजी के निर्गम का भाग रूप होना चाहिए.....खंड (xxxiv)

छूट प्राप्त आस्तियों का द्वारा प्रवर्ग आस्तियों का यह समूह है जिसे धारा 5 की उपधारा (1) में भी प्रमाणित किया गया है किन्तु जिसकी बाबत उस धारा की उपधारा (1क) छूट प्राप्ति की कुल रकम 5 लाख रुपए की कुल अधिकतम सीमा अधिरोपित करती है। ये आस्तियां निम्नलिखित हैं :—

(i) केन्द्रीय सरकार द्वारा विरचित और इस निर्मित अधिसूचित किसी स्कीम के अधीन निक्षेप। इस प्रकार इस उपबंध के अधीन केन्द्रीय सरकार के पास भारतीय स्टेट बैंक में 5 वर्षीय और 3 वर्षीय सावधि जमा, 1/2/3/5 वर्षीय डाकघर सावधिक जमा और 5 वर्षीय डाकघर आवर्ती जमा को छूट प्राप्त है।

(ii) दस वर्षीय राजकोष बचत जमापत्र, पन्द्रह-वर्षीय वार्षिकी पत्र, डाकघर बचत बैंकों में निक्षेप, डाकघर नगदी पत्र, डाकघर राष्ट्रीय बचत पत्र, डाकघर राष्ट्रीय योजना पत्र, बारह-वर्षीय योजना बचत पत्र, दस-वर्षीय रक्षा जमा पत्र और बारह-वर्षीय राष्ट्रीय रक्षा पत्र.....खंड (xvi)

उपर्युक्त (i) और (ii) में निर्विष्ट छूट प्राप्त आस्तियों की बाबत निम्नलिखित महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दें :—

(क) इन विनिधानों में से कुछ को शासित करने वाले नियमों में कुछ ऐसी अधिकतम सीमाएं अधिकथित की गई हैं जिन तक ऐसे विनिधान किए जा सकते हैं उदाहरणार्थ केन्द्रीय सरकार के पास भारतीय स्टेट बैंक में सावधि निक्षेपों के संबंध में एक खाते

के लिए यह सीमा 25,000 रुपए और संयुक्त खाते के लिए 50,000 रुपए है।

10-वर्धीय

डाकघर बचत बैंक मावधिक जमा के संबंध में क्रमः यह अधिकतम सीमा 1,20,000 रुपए और 2,40,000 रुपए होगी। ऐसी सीमा कुछ अन्य विनिधानों के संबंध में भी है।

इन सभी दशाओं में धन-कर से छूट प्राप्त अधिकतम रकम वह होगी जिस तक इन विनिधानों को शासित करने वाले नियमों के अधीन निषेप किए जा सकते हैं।

(ख) यदि ऐसी आस्तियां 1-3-1970 के पूर्व से निरंतर निर्धारिती द्वारा धार्गित हों तो उनको 5 लाख रुपए की सीमा नागू नहीं होगी।

(ग) 5 लाख की सीमा डाकघर बचत बैंक (संचयी सावधिक जमा) अधिनियम, 1981 के अधीन निषेपों की दशा में, जो पूर्ण रूप से छूट प्राप्त है, भी नागू नहीं होगी।

(iii) 1 जून, 1988 को या उसके पश्चात् निर्गमित किसी पब्लिक सेक्टर कंपनी के कतिपय अधिसूचित डिवेंचर 1 जून, 1988 में पूर्व निर्गमित ऐसे डिवेंचर पूर्ण रूप से छूट प्राप्त है और वे प्रथम प्रबंग के क्रम संख्याक (xiii) में वर्णित हैं....खंड (xvi)।

(iv) प्रथम प्रबंग के उपर्युक्त क्रम संख्याक (ii) और क्रम सं. (xiv) में वर्णित से भिन्न केन्द्रीय सरकार या राज्य प्रकार की प्रतिभूतियां....खंड (xxii)।

(v) प्रथम प्रबंग के क्रम सं. (xxv) में वर्णित से भिन्न अन्य किसी भारतीय कंपनी में शेयर....खंड (xxiii)।

(vi) ऐसे डिवेंचर जिन्हें किसी सहकारी सोसाइटी या अन्य संस्था या प्राविकारी ने जिसे केन्द्रीय सरकार इस निमित अधिसूचित करे निर्गमित किया है उवाहणाथं राज्य विद्युत बोर्ड, कृषि औद्योगिक निगम, आवास बोर्ड (ग्रामीण विकास के लिए) सहकारी प्रसंस्करण और विवरण सोसाइटियां और अन्य अनुमोदित राज्य समर्थित संस्थाओं को छूट के लिए अधिसूचित किया गया है....खंड (xxiv)।

(vii) आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 10 (23ब) के अधीन विनिर्दिष्ट किसी पब्लिक सेक्टर बैंक या पब्लिक वित्तीय संस्था द्वारा स्थापित पारस्परिक निधि के घूनिटखंड (xxiv)।

(viii) भारतीय यूनिट ट्रस्ट के यूनिटखंड (xxv)।

(ix) ऐसी किसी राष्ट्रीय बचत योजना के अधीन निषेप जो इस निमित केन्द्रीय सरकार द्वारा विरचित और अधिसूचित को गई हो।

पांच लाख रुपए की सपूर्ण अधिकतम सीमा को ऐसे निषेपों के संबंध में पञ्चीस हजार रुपए बढ़ाया जाता है।

....खंड (xxv) और धारा 5 (1क) का तीसरा परत्तुक।

(x) बैंकों में निषेप, जिसके अन्तर्गत बैंककारी कारबार चलाने वाली सहकारी सोसाइटी में निषेप भी है....खंड (xxvi)।

(xi) भारत के औद्योगिक विकास के लिए दीर्घकालिक वित्त की उपलब्धि कराने में लगे हुए किसी वित्तीय निगम या भारत में बनाई गई और रजिस्ट्रीकृत किसी ऐसी पब्लिक कंपनी के पास कोई निषेप जिसका मूल्य उहेण्य भारत में आवासिक गृहों के सन्निर्माण या क्य के लिए दीर्घकालिक वित्त की उपलब्धि कराना है....खंड (xxvii)।

(xii) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक में निषेप खंड (xxvii)।

(xiii) ऐसे प्राधिकरणों में निषेप जिन्हें नगरों, कस्बों और ग्रामों की योजना, विकास या सुधार के लिए आवास स्थान उपलब्ध कराने के लिए गठित किया गया है। जैसे दिल्ली विकास प्राधिकरण और सुधार न्यास खंड (xxvii)।

(xiv) राष्ट्रीय आवास बैंक में निषेप। यह निर्धारण वर्ष 1990-91 से उपलब्ध है खंड (xxviii)।

(xv) किसी सहकारी सोसाइटी में शेयर खंड (xxviii)।

(xvi) प्रथम प्रबंग के उपर्युक्त क्रम सं. (x) और क्रम सं. (xxix) में वर्णित से भिन्न किसी सहकारी सोसाइटी में किसी सदस्य द्वारा निषेप खंड (xxix)।

(xvii) भूमि या भवन या उनमें किसी अधिकार से भिन्न आस्तियां या कोई आस्ति जिसे धारा 5(1) के अनेक खंडों के अधीन छूट प्राप्त हो और जो निर्धारिती से संबंधित औद्योगिक उपक्रम का भाग रूप हो खंड (xxx)।

धारा 5(1) के अनेक खंडों प्रगणित आस्तियों, जो ऊपर या तो छूट प्राप्त आस्तियों के प्रथम प्रबंग में या दूसरे प्रबंग में वर्णित हैं, में से कुछ के संबंध में छूट का दावा करने के लिए एक अन्य गति, जिसे धारा (3) द्वारा अधिरोपित किया गया है, यह है कि वे सुसुगत मूल्यांकन की तारीख को समाप्त होने वाले क्रम से कम छह मास की अवधि के लिए निर्धारिती के स्वामित्व में रही हों अन्यथा छूट से इन्कार कर दिया जाएगा। वे आस्तियां जिनके संबंध में यह गति लागू होती हैं उनका नीचे उल्लेख किया गया है:—

(क) पुरोलिलाखित छूट प्राप्त आस्तियों के प्रथम प्रबंग के क्रम सं. (xvii), (xviii), (xix) और (xxv)।

(ब्र) पूर्वोलिखित छूट प्राप्त आस्तियों के दूसरे प्रत्येक के क्रम सं. (i), (ii), (iii), (iv), (v), (vi), (viii), (x), (xi), (xii), (xiii), (xv) और (xvi) ।

परन्तु किसी कंपनी की दशा में धारणावधि छह माह से कम हो सकती है यदि शेयर उस तारीख से धारित किए जाते हैं जिसको शेयर कंपनी द्वारा पहली बार निर्गमित किए गए थे । इसी प्रकार पूँजी विनिधान बंधपत्र की दशा में पंचिलक सेक्टर कंपनी के अधिसूचित डिवेलपरों और राहत बंधपत्रों की दशा में धारणावधि छह मास से कम हो सकेगी यदि उन्हें निर्धारिती ने उस तारीख से धारित किया हुआ है जिस तारीख को उसके द्वारा उन्हें प्रतिश्रुत किया गया था ।

इसके अतिरिक्त जहां धारा 5 के अधीन छूट प्राप्त आस्तियों (जिन्हें मूल आस्तियों कहा गया है) को पूर्वोलिखित (क) और (ख) में वर्णित छूट प्राप्त आस्तियों (जिन्हें नई आस्तियों कहा गया है) से भिन्न किसी आस्ति में मूल आस्ति के अस्तित्व में न रहने के आठ दिन के भीतर संपरिवर्तित किया गया है तो नई आस्ति के संबंध में छह मास की अवधि की संगणना के प्रयोगन के लिए उस अवधि की, जिस के लिए नई आस्ति स्वामित्व में रही है, संगणना उस अवधि को ध्यान में रख कर की जाएगी जिसके लिए मूल आस्ति मुमुक्षुत मूल्यांकन तारीख को समाप्त होने वाली बारह मास की अवधि के भीतर स्वामित्व में रही ।

7. उपर्युक्त 6 में जिन छूटों का दावा किया गया है उनका कुल जोड़ यहां उपदर्शित किया जाना चाहिए ।

8. जंगम संपत्ति का संकलित मूल्य (अर्थात् 5-7) यहां उपदर्शित किया जाना चाहिए ।

म. किसी फर्म या व्यक्ति संगम (ए ओ पी) में उसके भागीदार या सदस्य के रूप में हित :

1. यहां दिए गए स्तंभ में किसी फर्म के भागीदार के रूप में या किसी व्यक्ति संगम के सदस्य के रूप में धारित हित के निम्नलिखित बौद्धिक दीजिए :—

(क) ऐसी प्रत्येक फर्म का नाम और पता जिसमें भागीदार के रूप में हित धारित है ।

(ख) ऐसे प्रत्येक व्यक्ति संगम का नाम और पता जिसमें सदस्य के रूप में हित धारित है ।

किसी फर्म या व्यक्ति संगम में हित के मूल्य का अवधारण अनुसूची III के नियम 15 और 16 के अनुसार किया जाएगा और उसे उसके लिए उपबंधित स्तंभों में दर्शित किया जाएगा ।

किसी फर्म में ऐसे अव्यस्क संतान के, जिसे ऐसी फर्म में भागीदारी के फायदों में सम्मिलित किया गया है, हित का मूल्य, जिसे धारा 4(1)(ख) के परन्तु के उपबंधों के अधीन निर्धारिती के शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाना है

उपर्युक्त (क) में भी उदर्शित किया जाना चाहिए । उनका कुल जोड़ (क) और (ख) के बाहरी स्तंभ योगों में उपदर्शित किया जाना चाहिए ।

फर्म या व्यक्ति संगम या दोनों, जैसी भी स्थिति हो, के तुलनपत्र वी एक प्रति और प्रत्येक मामले में लेखा परीक्षक की रिपोर्ट, यदि कोई हो, संलग्न की जानी चाहिए ।

2. यहां उपर्युक्त मद 1(क) और 1(ख) के योग उपदर्शित करें ।

3. यहां धारा 5(1) और 1(क) के अधीन वे छूटें, जो किसी भागीदार या सदस्य को किसी फर्म या व्यक्ति संगम में अपने हित के संबंध में उपलब्ध हैं, उपदर्शित करें ।

अनुसूची III के नियम 16 में यह उपबंध किया गया है कि किसी फर्म या व्यक्ति संगम के शुद्ध धन का अवधारण करते समय धारा 5(1) और (1क) में वर्णित छूटें अनुज्ञात नहीं की जाएंगी परन्तु यदि किसी फर्म या व्यक्ति संगम के शुद्ध धन में इन उपबंधों के अधीन छूट प्राप्त किसी आस्ति का मूल्य सम्मिलित है तो किसी भागीदार या सदस्य के हित के मूल्य की आवत्ता यह समझा जाएगा कि उसमें उक्त आस्तियों में उसके आनुपातिक अंश का मूल्य सम्मिलित है और धारा 5(1) और (1क) के उपबंध प्रत्येक भागीदार या सदस्य को लागू होंगे ।

अतः किसी फर्म या व्यक्ति संगम में किसी भागीदार या सदस्य के आनुपातिक अंश के मूल्य, जो धारा 5(1) या (1क) के अधीन छूट प्राप्त है और जिसे ऐसे फर्म व्यक्ति संगम में उसके हित के मूल्य में सम्मिलित किया गया है को भी यहां दर्शित किया जाना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त धारा 5(1) (xxxii) के उपबंधों के अधीन आस्तियों में (जो कोई भूमि या भवन या उनमें अधिकार या कोई आस्ति जिसे धारा 5(1) के किसी अन्य खंड के अधीन छूट प्राप्त हो, न हो) (निर्धारिती के हित का मूल्य जो किसी ऐसी फर्म या व्यक्ति संगम से संबंधित औद्योगिक उपकरण का भाग रूप हो जिसका निर्धारिती भागीदार या सदस्य है, को भी छूट प्राप्त है । परन्तु यह छूट धारा 5(1क) द्वारा अधिरोपित पांच लाख रुपए की संपूर्ण अधिकरतम सीमा के अध्यधीन होगी । यदि इस उपबंध के अधीन छूट का दावा किया जाता है तो उसे भी यहां उपदर्शित किया जाना चाहिए ।

अनुसूची III के नियम 16 में भी यह उपबंध किया गया है कि यदि किसी फर्म या व्यक्ति संगम के शुद्ध धन में भारत के बाहर स्थित किसी आस्ति का मूल्य सम्मिलित किया गया है तो भारत में स्थित आस्तियों में किसी भागीदार या सदस्य के हित के मूल्य का अवधारण उस अनुपात को ध्यान में रखकर किया जाएगा, जो उन आस्तियों से संबंधित अर्थों द्वारा कम हो जाने वाली भारत में स्थित आस्तियों के मूल्य का किसी फर्म या व्यक्ति संगम के शुद्ध धन के प्रति अनुपात है ।

4. उपर्युक्त 3 में जिन छूटों का दावा किया गया है उनका कुल जोड़ यहाँ उपदर्शित किया जाना चाहिए।

5. किसी फर्म या व्यक्ति संगम में उसके भागीदार या मदस्य के रूप में हित का कुल मूल्य (2—4) यहाँ उपदर्शित किया जाना चाहिए।

पृष्ठ 6

प्र—निर्धारिती द्वारा देय ऋण

I. कृपया इस उपभाग के उपर्युक्त स्तंभों में निर्धारिती द्वारा देय सभी ऋणों, चाहे वे किसी संपत्ति पर प्रतिभूत या उसके संबंध में उपगत हों या न हों, चाहे शुद्ध धन की संगणना करने समय घटाए जाने वाले हों या न हों और चाहे भारत में या भारत से बाहर अवस्थित हों, के ब्यांचे प्रस्तुत कीजिए। ऋण उस स्थान पर अवस्थित माना जाता है जहाँ वह संदेश होता है। यदि संदाय का स्थान विनिर्दिष्ट नहीं किया गया है, तो ऋण की अवस्थित लेनदार के निवास स्थान से निर्धारित होती है।

II. किसी अन्य व्यक्ति की आस्तियों के संदर्भ में ऐसे ही ऋणों के ब्यांचे भी जो धारा 4 के अधीन निर्धारिती के शुद्ध धन में सम्मिलित किए जाने योग्य हैं, यहाँ दिए जाएं। ऐसी आस्तियों की प्रकृति उपभाग "क" में क्रम सं. II पर स्पष्ट की गई है।

III. उपभाग क, ख और ग में शुद्ध धन में सम्मिलित किसी निर्धारितीय सम्पत्ति पर प्रभार राशि भी, इस उपभाग में उपर्युक्त स्थान पर दियाई जाए। प्रभार की प्रकृति उस व्यक्ति का नाम पता और उसमें संबंध जिसके पक्ष में प्रभार विचारान है, भी यहाँ दिए जाएं।

निर्धारिती द्वारा चलाए जाने वाले कारबार या वृत्ति से संबंधित ऋण

I. निर्धारिती द्वारा स्वत्वधारी के रूप में चलाए जाने वाले कारबार या वृत्ति से संबंधित ऋणों के निम्नलिखित ब्यांचे, यहाँ दिए गए स्तंभों में उपदर्शित करें:—

(क) ऋण का वर्णन, तथा जिस व्यक्ति से ऋण लिया गया उसका नाम और पता और व्याज की दर, यदि कोई है।

(ख) यदि ऋण उपभाग क की मद सं. 6 या उपभाग ख की मद सं. 3 में सम्मिलित किसी सम्पत्ति पर प्रतिभूत है या उसके संबंध में उपगत किया गया है, तो यहाँ पर वह सम्पत्ति विनिर्दिष्ट की जाए और उपभाग क और ख की तरह ही उसका वर्णन दिया जाए ताकि आसानी से सहसंबंध स्थापित किया जा सके।

(ग) यहाँ ऋण पर प्रोद्भूत मूल्यांकन की तारीख तक असंवत्त व्याज की रकम सहित ऋण की सकल रकम दी जाए।

(घ) यदि स्तंभ (ग) में उल्लिखित निर्धारिती द्वारा देय किसी ऋण की संकलित राशि में से, सम्पूर्ण

ऋण या ऋण का कोई भाग शुद्ध धन की संगणना में घटाने योग्य नहीं है, तो इस स्तंभ में ऐसी न घटाने योग्य राशि उपदर्शित की जाए। धारा 2 (इ) के उपबंधों के अधीन शुद्ध धन की संगणना में न घटाने योग्य ऋण इस प्रकार है:—

(i) किसी ऐसे व्यष्टि के मामले में जो भारत का नागरिक नहीं है, या कोई व्यक्ति या कोई हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब जो भारत में निवासी नहीं है या निवासी किन्तु मामूली तौर पर भारत में निवासी नहीं है, भारत में याहर अवस्थित ऋण।

(ii) वे ऋण जो किसी ऐसी सम्पत्ति पर प्रतिभूत हैं या उसके संबंध में उपगत किए गए हैं जिसकी बाबत धनकर प्रभार्य नहीं है। जिस सम्पत्ति पर धनकर प्रभार्य नहीं है, इस प्रकार है:—

(1) वे आस्तियां जो धारा 2(इ.) में दी गई आस्तियों की परिभाषा से अपवर्जित रखी गई हैं जैसे कि कृषि भूमि या उपभाग ख में मद सं. 6 में उल्लिखित प्रकार की जंगम सम्पत्ति।

(2) वे आस्तियां जो धारा 6 के उपबंधों के अधीन किसी व्यष्टि, जो भारत का नागरिक नहीं है या कोई व्यष्टि या हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब जो भारत में निवासी नहीं है या निवासी किन्तु मामूली तौर पर निवासी नहीं है, के शुद्ध धन की संगणना करने में हिसाब में नहीं ली जानी है। इस प्रकार अपवर्जित आस्तियां हैं:—

(क) भारत से बाहर स्थित आस्तियां:—

(ख) भारत स्थित आस्तियां जो ऐसे किसी मामले में निर्धारिती को प्राप्त कोई उधार या ऋण के रूप में हैं जहाँ ऐसे उधारों या ऋणों पर संदेश व्याज आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 10 के अधीन छूट प्राप्त है।

इस प्रकार, उदाहरण के लिए, यदि कोई अनिवासी निर्धारिती भारत से बाहर स्थित किसी आस्ति के संबंध में भारत में ऋण उपगत करता है ताकि ऐसी आस्ति उसके शुद्ध धन में सम्मिलित न की जा सके, तो इस प्रकार उपगत ऋण की उसके शुद्ध धन से घटाया नहीं जाएगा।

(3) वे आस्तियां जिनका मूल्य धारा (5)(1) और धारा 5(2) के उपबंधों के अधीन छूट प्राप्त है। किसी ऐसी आस्ति के मामले में जो धारा 5

की उपधारा (1क) के उपबंधों के अधीन पूर्णतः या भागतः छूट प्राप्त है, उस आस्ति पर प्रतिभूत या उसके संबंध में उपगत किसी ऋण की अकटौती, उम आस्ति को उपधारा (1क) के अधीन मिलने वाली छूट के मूल्य तक सीमित रहेगी (स्पष्टीकरण-2, धारा 2ज.) उदाहरण:— यदि 10 लाख रु. मूल्यवाली किसी आस्ति, जो धारा 5(1क) के उपबंधों के अधीन केवल 5 लाख रु. तक के संबंध में 6 लाख रु. का कोई ऋण उपगत किया। 5 लाख रु. तक की ऋण कटौती योग्य नहीं होगा जब कि वे 1 लाख रु. का शेष ऋण की शुद्ध धन से कटौती योग्य माना जाएगा परन्तु यदि ऋण की राशि केवल 4 लाख रु. ही हो तो सम्पूर्ण ऋण शुद्ध धन में कटौती योग्य माना जाएगा। यह भी उपबंधित किया गया है कि जबां ऋण धारा 5 (1क) के अधीन छूट प्राप्त किसी आस्ति पर प्रतिभूत है या उसके संबंध में उपगत किया गया है वहां पहले उस आस्ति के मूल्य के प्रति, जिस पर या जिसके संबंध में ऋण प्रतिभूत है या उपगत किया गया है और उसके बावजूद इस प्रकार छूट प्राप्त किसी अन्य आस्ति के मूल्य के प्रति छूट अनुज्ञात की जाएगी। [धारा 5(1) (क) का स्पष्टीकरण] उदाहरण के लिए यदि, शुद्ध धन में 6 लाख रु. मूल्य का एक मकान और 6 लाख रु. मूल्य के शेयर ये जो दोनों ही धारा 5(1क) के अधीन 5 लाख रु. की सम्पूर्ण अधिकतम छूट के लिए अर्हता रखते हैं और यदि मकान के लिए 3 लाख रु. का ऋण उपगत किया गया है तो धारा 5 (1क) के अधीन 5 लाख रु. की छूट गुह संपत्ति के लिए अनुज्ञात की जाएगी। फलस्वरूप 3 लाख रु. का ऋण शुद्ध धन की संगणना में कटौती योग्य नहीं होगा।

(iii) कतिपय प्रथय कर अधिनियमों के अधीन परित किसी आदेश के परिणामस्वरूप शास्ति या व्याज की राशि जो भूत्यांकन की तारीख को बकाया है, और :—

- (क) यदि अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों में राशि विवादास्पद है, या
- (ख) यद्यपि उपरोक्त प्रकार से राशि विवाद-प्रस्त नहीं है, यदि भूत्यांकन की तारीख को गणि 12 महीनों में अधिक समय तक बकाया रही है।

बकाया कर आयि की कटौती का यह प्रतिष्ठ निम्नलिखित अधिनियमों/कानूनों के अधीन सूजित मांगों के संबंध में है। —

- (1) आय अथवा लाभों के कराधान से संबंधित कोई कानून जैसे आयकर, कृषि आय आदि के कराधान से संबंधित कोई राज्य विधान
- (2) धनकर अधिनियम
- (3) दानकर अधिनियम
- (4) व्ययकर अधिनियम

(ज) यहां पर ऋण की शुद्ध रकम जो शुद्ध धन की संगणना में कटौती योग्य है, उपदर्शित करें। (अर्थात् ग-घ) जैसा कि इन टिप्पणी में पहले उपदर्शित किया गया है ऐसे कारबार, जिसके लेख नियमित रूप से रख जाते हैं, की आस्तियों के भूत्यांकन के लिए नियम 14 लागू होगा नियम 14(2) के खंड (ज) में तुलनपद में दिखाए गए दायित्वों, जिन्हें ऐसे कारबार की आस्तियों का शुद्ध मूल्य अवधारित करते समय हिसाब में नहीं लिया जाना है, को प्रगणित किया गया है। इस बात का ध्यान रखा जाए कि ऐसी मदों का ऋण के रूप में दावा न किया जाए। खंड (ज) के उपखंड (V) में यह भी उपबंध किया गया है कि निर्धारिती द्वारा देय कोई ऋण उस सीमा तक जितने तक उस ऋण का विनिविष्ट रूप में उस आस्ति के अर्जन के लिए उपयोग किया गया है, जिसके लिए धनकर सदैय नहीं है, हिसाब में न लिया जाए। परन्तु ऐसे किसी ऋण के ब्यौरे और सकल राशि पहले स्तंभों (क) से (ग) तक में दिखाई जाए और किर स्तंभ (घ) में इसके कटौती योग्य न होने का दावा किया जाए। ऊपर स्तंभ (क) से (इ) तक में किसी फर्म में भागीदार या व्यक्ति संगम में सदस्य के अंश के संबंध में उपगत ऋण से संबंधित ब्यौरे भी उपदर्शित किए जाएँ। इस प्रकार यदि किसी भागीदार ने फर्से में अपनी पूजी विनिवान के लिए या संपत्ति के विलुद्ध 50,000 रु. का कोई ऋण लिया है जो उससे भागीदारी में स्वयं के सम्मिलित होने के प्रतिकल स्वरूप फर्म को अन्तरित कर दिया है तो 50,000 रु. के ऋण के ब्यौरे यहां दिखाए जाए। ऐसे मामले में भी, यदि फर्म/व्यक्ति संगम के भागीदार या सदस्य के हित का मूल्य पूर्णतः या भागतः छूट प्राप्त है, तो 50,000 रु. के ऋण का उतना भाग कटौती योग्य नहीं होगा जितना इस प्रकार छूट प्राप्त है।

2. यहां पर 1(रु) में उल्लिखित रकमों का कुल जोड़ उपदर्शित करें। ऊपर 1 में सम्मिलित ऋणों से मिल ऋण

3. यहां दिए गए स्तंभों में निम्नलिखित ऋणों के संबंध में उसी प्रकार के ब्यौरे उपदर्शित करें जैसे कि क्रम सं. 1 में दिए गए हैं।

- (i) निर्धारिती द्वारा चलाए जाने वाले कारबार या वृद्धि की आस्तियों के मिल आस्तियों पर प्रतिभूत या उनके संबंध में उपगत ऋण, और
- (ii) वे ऋण जो किन्हीं आस्तियों से संबंधित नहीं हैं, उदाहरण के लिए विवाह या बच्चों की शिक्षा के लिए लिए गए या कोई अन्य व्यक्तिगत अधार। ऊपर

क्रम में । पर उल्लिखित ऋणों के संबंध में दिए गए विष्टुत टिप्पण यहां पर उल्लिखित ऋणों के दावे पर भी नाम होंगे ।

4. यहां पर 3(3) में उल्लिखित राशियों का कुल जोड़ उपदर्शित करें ।

5. यहां पर कटौती धोय ऋणों का संकलित मूल्य (2+4) उपदर्शित किया जाए ।

उ. अधिसूचित आस्तियों का विवरण, जिन पर धनकर संदेश नहीं है किन्तु जिन्हे धारा 5(2) के अधीन शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाना है और जो ऊपर उपधारण और ग में इस प्रकार सम्मिलित भी कर ली गई है ।—

1. यहां दिए गए स्तंभों में केन्द्रीय या राज्य सरकारों के पाय निक्षेपों का बर्णन और केन्द्रीय या राज्य सरकारों की प्रतिभूतिया, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा धारा 5(2) के अधीन छूट के लिए अधिसूचित की जा चुकी है, कर से इस प्रकार शुट देने वाली केन्द्रीय सरकार की अधिसूचना का संख्याक और तारीख और ऐसे प्रत्येक निक्षेप और/या प्रतिभूति का मूल्य उपदर्शित करें ।

2. 1 पर दिखाई गई रकमों का कुल जोड़ यहां उपदर्शित करें ।

3. यहां फर्म या व्यक्ति संगम के शुद्ध धन में सम्मिलित ऊपर मद 1 में उल्लिखित प्रकृति की आस्तियों के मूल्य में भागीदार या सदस्य के आनुपातिक अंश का मूल्य उपदर्शित करें जो ऐसी फर्म या व्यक्ति संगम में भागीदार या सदस्य के हित के मूल्य में सम्मिलित है ।

4. यहां पर ऊपर 2 और 3 में उल्लिखित राशियों का कुल जोड़ उपदर्शित करें ।

टिप्पणी : इस उपभाग में दिखाई गई आस्तियों का कुल मूल्य धनकर परिकलन के प्रयोजनों के लिए सुरक्षा द्वागा जैसा कि भाग II में स्पष्ट किया गया है ।

पृष्ठ 7

(च) भारत से बाहर स्थित और शुद्ध धन में सम्मिलित शुद्ध धन का विवरण अर्थात् उपभाग क, घ और ग में दिखाई गई आस्तियों और उपभाग घ में दिखाए गए ऋण :—

1. यहां भारत से बाहर स्थित और विवरणी के पृष्ठ 2 पर पूर्वतः मद म. क-1 में सम्मिलित स्थावर सम्पत्तियों का कुल मूल्य उपदर्शित करें ।

2. यहां भारत से बाहर स्थित और विवरणी के पृष्ठ 2 पर पूर्वतः मद स. 6 में सम्मिलित स्थावर सम्पत्तियों का कुल मूल्य उपदर्शित करें ।

3. यहां पर 1 और 2 का कुल जोड़ उपदर्शित करें ।

4. यहां ऊपर मद 1 और 2 में दिखाई गई और विवरणी के पृष्ठ 2 पर मद क-3 और क-8 में पहले ही

सम्मिलित की जा चुकी स्थावर सम्पत्तियों में संबंधित छूटों की कुल रकम उपदर्शित करें ।

5. यहां पर भारत में बाहर स्थित जंगम आस्तियों का संकलित मूल्य (अर्थात् 3-4) उपदर्शित किया जाना है ।

6. यहां पर भारत में बाहर स्थित और विवरणी के पृष्ठ 3-4 पर पूर्वतः मद ख (1) से (10) में पहले ही सम्मिलित कर ली गई जंगम सम्पत्तियों का कुल मूल्य उपदर्शित करें ।

7. यहां पर भारत में बाहर स्थित और विवरणी के पृष्ठ 5 पर पूर्वतः मद ख-3 में पहले ही सम्मिलित की जा चुकी जंगम सम्पत्तियों का कुल मूल्य उपदर्शित करें ।

8. यहां पर 6 और 7 का कुल जोड़ उपदर्शित करें ।

9. यहां पर ऊपर मद 6 और 7 में दिखाई गई और विवरणी के पृष्ठ 5 पर पूर्वतः मद ख-6 में पहले ही सम्मिलित कर ली गई जंगम सम्पत्तियों से संबंधित छूटों की कुल रकम उपदर्शित करें ।

10. यहां पर भारत में बाहर स्थित जंगम आस्तियों का संकलित मूल्य (अर्थात् 8-9) उपदर्शित किया जाना है ।

11. यहां पर किसी फर्म या व्यक्ति संगम में उसके भागीदार या सदस्य के रूप में धारित हित का कुल मूल्य उपदर्शित करें जो भारत से बाहर स्थित है और विवरणी के पृष्ठ 5 पर मद ग 1 में पहले ही सम्मिलित कर लिया गया है ।

12. ऊपर मद 11 में दिखाए गए और विवरणी के पृष्ठ 5 पर मद स. ग-3 में पहले ही सम्मिलित भागीदार या सदस्य के हित के मूल्य से संबंधित छूटों का कुल मूल्य यहां उपदर्शित करें ।

13. यहां पर फर्म या व्यक्ति संगम में उसके भागीदार या सदस्य के रूप में धारित हित जो भारत से बाहर स्थित है, उपदर्शित किया जाना है (अर्थात् 11-12)

14. यहां भारत से बाहर स्थित शुद्ध धन का संकलित मूल्य उपदर्शित किया जाना है ।

15. यहां पर इस उपभाग में दिखाई गई आस्तियों में संदर्भित ऋणों जो विवरणी के पृष्ठ 6 पर मद घ 1 और घ 3 में पहले ही सम्मिलित किए जा चुके हैं का कुल मूल्य उपदर्शित करें ।

16. यहां पर भारत से बाहर स्थित शुद्ध धन का कुल मूल्य उपदर्शित कीजिए (अर्थात् 14-15)

टिप्पणी :—किसी ऐसे व्यक्ति को जो भारत का नागरिक नहीं है ग्रथवा किसी ऐसे व्यक्ति या हिन्दू

अविभक्त कटुम्ब को जो भारत में निवासी नहीं है या निवासी किन्तु मामूली नौर पर निवासी नहीं है, इस उपभाग को भरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसके मामले में, उपभाग क, ख, ग और घ में दर्शित उसकी आस्तियों और अट्ठों में से भारत में स्थित आस्तियां और अट्ठ पहले ही अपवर्जित कर दिए गए हों।

यह उपभाग ऐसे व्यष्टि को, जो भारत का नागरिक है और भारत में निवासी है और किसी हिन्दू अविभक्त कटुम्ब को जो भारत में निवासी है, ही भरा जाना है। ऐसे मामलों में भारत से बाहर स्थित शुद्ध धन का कुल मूल्य जो इस उपभाग में दिवाया गया है, धनकर के परिकलन के प्रयोजन के लिए सुसंगत होगा, जैसा कि भाग II में स्पष्ट किया गया है।

छ. शुद्ध धन का विवरण

1. यहां पर उपदर्शित करें:—

(क) स्थावर सम्पत्ति का संकलित मूल्य (विवरणी के पृष्ठ 2 पर मद क-11)

(ख) जंगम सम्पत्ति का संकलित मूल्य (विवरणी के पृष्ठ 5 पर मद ख-8)

(ग) किसी फर्म या व्यक्ति संगम में उसके भागीदार या मदस्य के रूप में धारित हित का संकलित मूल्य (विवरणी के पृष्ठ 5 पर मद ग-5)

2. यहां पर धन का संकलित मूल्य अर्थात् क, ख और ग का कुल जोड़ उपदर्शित किया जाना है।

3. यहां पर अट्ठों का संकलित मूल्य उपदर्शित करें (विवरणी के पृष्ठ 6 पर मद स. घ-5)

4. यहां पर शुद्ध धन (अर्थात् 2-3) उपदर्शित करना है।

5. यहां पर शब्दों और अंकों, दोनों में सौ रु. के निकटनम्, गुणज तक पूर्णांकित शुद्ध धन का उल्लेख करें।

6. यहां पर अन्य व्यक्तियों से संबंधित किन्तु धारा 4 के अधीन निर्धारिति के शुद्ध धन में सम्मिलित किया जाने योग्य, शुद्ध धन की राशि का उल्लेख करना है (जैसा कि उपभाग क के क्रम सं. 11 में साप्त किया गया है) और जिसे उपभाग क, ख, ग और घ में सम्मिलित किया गया है।

7. यहां पर ऐसे अन्य व्यक्ति, व्यक्तियों का/के नाम और उनसे संबंध का उल्लेख करें।

पाठ 8

भाग II

करों का विवरण

1. यहां पर भाग I के छ-5 पर संगणित शुद्ध धन पर संदेय धनकर उपदर्शित किया जाना है। कर अनुसूची के भाग I में विनिर्विष्ट दरों के अनुसार परिकलित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उक्त अनुसूची के नियम 1, 3 और 4 में निम्नलिखित प्रकार के मामलों में संदेय धनकर अवधारित करने की पद्धति उपबंधित की गई है:—

(1) यहां निर्धारिति के शुद्ध धन में किन्तु ऐसी आस्तियों का मूल्य सम्मिलित है जिनके लिए धारा 5 (2) के अधीन धन कर संदेय नहीं है (अनुसूची 1 का नियम 1)

(2) यहां निर्धारिति कोई ऐसा व्यष्टि है जो भारत का नागरिक नहीं है और जो भारत में निवासी नहीं है। (अनुसूची 1 का नियम 3)

(3) यहां निवासी निर्धारिति, जो ऐसा व्यष्टि है जो भारत का नागरिक है या कोई हिन्दू अविभक्त कटुम्ब है, के शुद्ध धन में भारत से बाहर स्थित कोई आस्तियां सम्मिलित हैं (अनुसूची 1 का नियम 4)

2. यहां पर विवरणी विलम्ब से फाइल करने के लिए प्रभार्य व्याज का उल्लेख करें। व्याज की संगणना करने का तरीका धारा 17-ख में अधिकथित है।

3. यहां पर संदेय कर और व्याज की कुल रकम उपदर्शित करनी है (अर्थात् 1 + 2)।

4. स्वतः निर्धारिति पर (अर्थात् विवरणी फाइल करने से पूर्व) संदेत कर और व्याज यदि कोई हो, के व्यौरे दीजिए और इस प्रकार संदेत राशियों के समर्थन में चालान भी संलग्न कीजिए।

5. यहां पर यथास्थिति संदेय शुद्ध कर/व्याज या शेष्य प्रतिदाय उपदर्शित करना है। प्रतिदाय इंगित करने के लिए इसके पहले अट्ठ (-) चिह्न लगा दें।

भाग III:—यदि निर्धारिति किसी फर्म/व्यक्ति संगम में भागीदार या सदस्य है, तो सूचना शृण्या यहां उपयुक्त स्तंभ में पूरी सूचना दीजिए।

भाग IV:—संलग्न दस्तावेजों/विवरणों की सूची:—

यहां धन विवरणी से संलग्न दस्तावेजों/विवरणों की पूरी विविडियां दीजिए।

सत्यापन: सत्यापन पर हस्ताक्षर करने में पूर्व इसके नीचे दिए गए अनुबंधों को ध्यानपूर्वक पढ़ लें। सत्यापन के सभी सुसंगत स्तंभों को भरिए। जैसा उपदर्शित किया गया है, तारीख और स्थान लिखिए।

[सं. 8912/फा. सं. 143/1/91-टी. पी. एल.]
म. प्रसाद, निदेशक (टी. पी. एल.)

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue)

New Delhi, the 26th August, 1991

WEALTH-TAX

S.O. 550 (E).—In exercise of the powers conferred by section 46 of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Wealth-tax Rules, 1957, namely:—

1. (1) These rules may be called the Wealth-tax (Amendment) Rules, 1991.
 (2) They shall come into force on the 1st of October, 1991.
 2. In the Wealth-tax Rules, 1957, for Form A, the following Form shall be substituted, namely:—

INCOME-TAX DEPARTMENT

WTS 1

RETURN OF NET WEALTH

FORM A

Receipt No. _____

[See Rule 3 (1) (a)]

Date _____

[FOR INDIVIDUALS AND HINDU UNDIVIDED FAMILIES]
[PLEASE READ THE ATTACHED NOTES CAREFULLY BEFORE FILLING THIS FORM 3]

11. ORIGINAL/REVISED/u/s 16(4) (I)/17 2. Assessment Year 19. - 3. Valuation date 19.

4. If revised, Receipt No. and date of filing of original return

**5. PAN/
GIR No**

Ward/Circle
Range

7. Residential Status

6. Status

8. Name (Surname first) [In Block letters]

9. Residential Address [In Block Letters]

Telephone _____ **PIN** _____

10. Office Address (In Block letters)

Telephone _____ **PIN** _____

11. Please indicate:

- (a) Are you a citizen of India? Yes/No
- (b) Is this your first Wealth-tax Assessment? Yes/No.
- (c) Are you assessed to Income-tax? Yes/No.
- (d) Have you filed return of Income/Gift of the same assessment year?
 (i) Return of Income Yes/No.
 (ii) Return of Gift(s) Yes/No.
- If answer to (d) is Yes on what date(s) and with which Ward/Circle Range?
- (i) Return of Income

 (ii) Return of Gift(s)

- (e) Is the return being filed as a legal representative? Yes/No.
- (f) In the case of Hindu undivided family:
 (i) Does the HUF have atleast one member whose net wealth is assessable for this assessment year? Yes/No

Part I COMPUTATION OF NET WEALTH INCLUDING NET WEALTH OF OTHER PERSONS INCLUDIBLE IN ASSESSEE'S NET WEALTH ON VALUATION DATE

1. IMMOVABLE PROPERTY

HELD AS ASSETS OTHER THAN IN BUSINESS OR PROFESSION

1. DESCRIPTION and SITUATION (a)	VALUE AS PER SCHEDULE-III (b) Rs. _____
_____	Rs. _____

2. TOTAL OF AMOUNTS AT 1(b) ABOVE

Rs. _____

3. LESS: EXEMPTIONS

DESCRIPTION	AMOUNT Rs. _____
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____

4. TOTAL OF 3 above

Rs. _____

5. AGGREGATE VALUE OF IMMOVABLE PROPERTY HELD AS ASSETS OTHER THAN IN BUSINESS OR PROFESSION (2+4)

Rs. _____

HELD AS ASSETS OF A BUSINESS OR PROFESSION

6. DESCRIPTION and SITUATION (a)	VALUE AS PER SCHEDULE-III (b) Rs. _____
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____

7. TOTAL OF AMOUNT AT 6(b) Above

Rs. _____

8. LESS; EXEMPTIONS

DESCRIPTION	AMOUNT
-----	Rs. -----.
-----	Rs. -----.
-----	Rs. -----.

9. TOTAL OF 8 ABOVE _____
Rs. _____

10. AGGREGATE VALUE OF IMMOVABLE PROPERTY HELD AS ASSETS OF A BUSINESS OR PROFESSION (7-9) Rs. -----
11. Aggregate Value of Immovable Property (5+10) Rs. -----

B. MOVABLE PROPERTY

HELD AS ASSETS OTHERS THAN IN BUSINESS OR PROFESSION DESCRIPTION

AMOUNT AS ON VALUATION DATE

(i) Cash in hand Rs. _____ Rs. _____

(iii) Cash at bank A/c No. Nature of A/c
 (Name of Bank/Branch) _____

_____	_____	Rs.	_____
_____	_____	Rs.	_____
_____	_____	Rs.	_____
		Rs.	Total Rs. _____

(iv) Precious metals	Weight		Value as per Schedule III
	Gross	Net	
(a) Gold	—	—	Rs. —
(b) Silver	—	—	Rs. —
(c) Platinum	—	—	Rs. —
(d) Others	—	—	Rs. — Total Rs. —

(v) Jewellery

(a) Gold ornaments	-----	Rs. -----
(b) Silver ornaments	-----	Rs. -----
(c) Ornaments made of platinum or any other precious metal or any alloy thereof.	-----	Rs. -----

2. TOTAL VALUE OF MOVABLE PROPERTY HELD AS ASSETS OTHER THAN IN BUSINESS OR PROFESSION [i.e. GRAND TOTAL OF TOTALS OF ITEMS 1(i) TO 1(x)]

Rs. ——————C/F to page

Amount B/F from page 4

Rs. - - - - -

HELD AS ASSETS OF BUSINESS OR PROFESSION

4. TOTAL OF AMOUNTS AT 3(b) ABOVE

Rs.-----

5. Total of amounts at 2 and 4 above

Rs. ——————

6. Less Exemptions

Description	Amount
	Rs. _____

7. Total of 6 above

8. Aggregate value of Movable Property (5-7)

R₃—

C. INTEREST HELD IN A FIRM OR ASSOCIATION OF PERSONS (AO) AS A PARTNER OR MEMBER THEREOF

1. (a) Firm

Name and Address	Value as per Schedule-III
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____
_____	Rs. _____
	Total Rs. _____

(b) AOP

Rs. _____
Rs. _____
Rs. _____
Total Rs. _____

2. Total of 1(a) and 1(b) above Rs. _____

3. Less Exemptions

Description	Amount
Rs. _____	Rs. _____

4. Total of 3 above Rs. _____

5. Aggregate value of interest held in a firm or AOP as a partner or member thereof (2+4) Rs. _____

D. DEBTS OWED BY THE ASSESSEE RELATING TO BUSINESS OR PROFESSION CARRIED ON BY HIM

1. Description of debt	If secured on or incurred in relation to any property, specify the property	Gross Amount	Amount not deductible, if any, in computation of net wealth	Net amount deductible
(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____

2. Total of amount at 1 (e) above Rs. _____

DEBTS OTHER THAN THOSE RELATING TO BUSINESS OR PROFESSION CARRIED ON BY HIM

3. Description of debt	If secured on or incurred in relation to any property, specify the property	Gross Amount	Amount not deductible, if any, in computation of net wealth	Net amount deductible
(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____
Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____	Rs. _____

4. Total of amount at 3(e) above Rs. _____

5. Aggregate value of debts (2+4) Rs. _____

E. STATEMENT OF NOTIFIED ASSETS ON WHICH WEALTH-TAX IS NOT PAYABLE BUT WHICH ARE TO BE INCLUDED IN NET WEALTH UNDER SECTION 5(2) AND HAVE BEEN SO INCLUDED IN THE ASSETS SHOWN IN SUB-PARTS .B & C ABOVE

1. Description of assets	No. and date of Central Government Notification granting exemption from tax	Value
Deposits with Central Government	Rs. _____	
Deposits with State Governments	Rs. _____	
Securities of Central Government	Rs. _____	
Securities of State Governments	Rs. _____	

Securities of local authorities	Rs. _____
2. Total of 1 above	Rs. _____
3. Interest held as a partner or member in the value of assets of the above nature included in the net wealth of a firm or AOP	Rs. _____
4. Total (2+3)	Rs. _____

F. STATEMENT OF NET WEALTH LOCATED OUTSIDE INDIA AND INCLUDED IN THE NET WEALTH i.e. IN THE ASSETS SHOWN IN SUB-PARTS A,B & C AND IN THE DEBTS SHOWN IN SUB-PART D ABOVE

1. Total value of immovable Property held as assets other than in Business or profession	Rs. _____
2. Total value of Immovable Property held as assets of Business or Profession	Rs. _____
3. Total Value (1+2)	Rs. _____
4. Less: Total Value of Exemptions	Rs. _____
5. Aggregate Value of Immovable Property (3—4)	Rs. _____
6. Total Value of Movable Property held as assets other than in Business or Profession	Rs. _____
7. Total Value of Movable Property held as Assets of Business or Profession	Rs. _____
8. Total Value (6+7)	Rs. _____
9. Less: Total Value of Exemptions	Rs. _____
10. Aggregate Value of Movable Property (8—9)	Rs. _____
11. Total value of interest held in a firm or AOP as a partner or member thereof	Rs. _____
12. Less Total Value of Exemptions	Rs. _____
13. Aggregate value of interest held in a firm or AOP as a partner or member thereof (11—12)	Rs. _____
14. Aggregate value of assets located outside India (5+10+13)	Rs. _____
15. Less: debts located outside India	Rs. _____
16. TOTAL VALUE OF NET WEALTH LOCATED OUTSIDE INDIA (14—15)	Rs. _____

G. STATEMENT OF NET WEALTH:

1. A. AGGREGATE VALUE OF IMMOVABLE PROPERTY (Item A.11)	Rs. _____
B. AGGREGATE VALUE OF MOBILE PROPERTY (Item B. 8)	Rs. _____
C. AGGREGATE VALUE OF INTEREST HELD IN A FIRM OR AOP AS PARTNER OR MEMBER THEREOF (ITEM C.5)	Rs. _____
2. AGGREGATE VALUE OF ASSETS (A+B+C)	Rs. _____
3. LESS: AGGREGATE VALUE OF DEBTS (Item D.5)	Rs. _____
4. NET WEALTH (2—3)	Rs. _____
5. NET WEALTH (As rounded off to the nearest multiple of hundred rupees)	Rs. _____
(In words) _____	Rs. _____

6. Amount of net Wealth included in 2 above, being net wealth of any other person

7. Name and relationship of such person _____

STATEMENT OF TAXES

PART-II

1. TAX ON NET WEALTH Rs. _____

2. Add: Interest on late filing of Return Rs. _____

3. TOTAL TAX AND INTEREST PAYABLE (i.e. 1+2) Rs. _____

4. LESS: TAX AND INTEREST, IF ANY, PAID ON : TAX Rs. INTEREST Rs. Total Rs. _____
SELF ASSESSMENT (Attach Challan(s))

Date of payment 19

Name of the Bank/
Branch

5. TAX/INTEREST PAYABLE OR REFUND DUE (3-4) Rs. _____

PART-III INFORMATION WHERE ASSESSEE IS A PARTNER OR MEMBER OF A FIRM/AOP

SL.No.	NAME OF OTHER PARTNERS/MEMBERS	Share of Profit Ratio	Value of interest in wealth of Concern
Firm	(a)	(b)	(c)
AOP			(d)

PART-IV LIST OF DOCUMENTS/STATEMENTS ATTACHED

(a)	(d)
(b)	(e)
(c)	(f)

1. VERIFICATION

I _____ *son/daughter/wife of Shri _____ Solemnly declare
(Name in block letters) (Name of father/husband)

that to the best of my knowledge and belief, the information given in this Return and the annexures and statements accompanying it is correct and complete, that the amount of net wealth and other particulars shown are truly stated and relate to the valuation date relevant to the assessment year commencing on the 1st day of April, 19—

I further solemnly declare that

*I _____ the person for and on whose behalf this return is furnished
the person in respect of whose net wealth I am assessable had no other asset belonging to

*me _____ either in *my _____ name or in the name of any other person which
the said person _____ the said person's
is required to be taken into consideration in computing

*my _____ net wealth on the said valuation date.
the said person's

I further declare that I am making this return in my capacity as _____ of
and that I am competent to make this return and verify it.

Date _____

Signature _____

Place _____

IMPORTANT— Before signing the verification, the signatory should satisfy himself that this return is correct and complete in every respect. Any person making a false statement in this return shall be liable to prosecution under section 35D of the Wealth-tax Act, 1957, and on conviction be punishable:—

- (i) In a case where the tax sought to be evaded exceeds one lakh rupees, with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than six months but which may extend to seven years and with fine;
- (ii) in any other case, with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than three months but which may extend to three years and with fine.

*Strike out whichever is not applicable.

INCOME-TAX DEPARTMENT

WTS. 1

NOTES

(TO BE DETACHED AND RETAINED BY THE ASSESSEE)

FROM A

[Wealth-tax Act, 1957|Rule 3(1)(a)]

General

I. Form A is for Individuals and Hindu Undivided Families only.

II. All Parts and Columns must be filled in manner provided hereunder. If any Part or column does not apply, please mention NA (Not Applicable) and do not put any mark or symbol.

III. The numbers (given in arabic, e.g. 1,2,3,...) in these notes under each page refer to the corresponding item numbers on the respective pages of the Return of Net Wealth.

IV. In case space provided under any item of Part of the Return Forms is found insufficient, then give computation in respect of such item on separate sheet(s) using the columns indicated for that purpose under the said item in the Return Form and attach that to the Return. The sum totals of such computation done should be indicated in the columns provided under the relevant item in the Return Form. Similiarly, any other information asked for in this Form, which cannot be completely furnished on account of paucity of space, may be furnished on a separate sheet.

V. References to sections and Schedules in these notes are references to sections and Schedules of the Wealth-Tax Act, 1957 and references to rules are reference to the rules of the Wealth-tax Rules, 1957.

VI. Value of an asset for an assessment year is to be DECLARED AS ON THE RELEVANT VALUATION DATE. Valuation date in relation to an assessment year under the Wealth-tax Act, 1957 means the last day of the previous year as defined in section 3 of the Income-tax Act, 1961. Assessment year means a period of twelve months commencing on 1st April every year, immediately following the said valuation date. Thus, for the assessment year 1991-92, the valuation date will be 31-3-1991, while for the assessment year 1992-93, the valuation date will be 31-3-1992.

VII. Value of an asset, other than cash, is to be determined on the basis of the rules of Schedule III. THE DETAILS OF CALCULATION OF THE VAULE OF EACH ASSET UNDER THE RELEVANT RULE OF THIS SCHEDULE SHOULD BE ATTACHED WITH RETURN.

ALSO WHEREVER ANY RULE OF THIS SCHEDULE PRESCRIBES THAT A PARTICULAR

LAR DOCUMENT IN SUPPORT OF THE VALUATION IS TO BE ATTACHED WITH THE RETURN, THE SAME MUST BE SO ATTACHED.

VIII. All attachments must be signed by the assessee.

Page 1

1. Strike out whichever is not applicable. If it is a return for the assessment year 1991-92 filed for the first time, then it is an original return. To indicate this, leave "original" as it is and strike out the rest, e.g. Original.

2. Indicate the assessment year for which the return is filed.

3. Indicate the relevant valuation date here.

4 If this is a revised return, first give the receipt number and then the date of original return.

Example : If the original return is filed on 15-6-91, for which the department had issued receipt No. 4210, it should be indicated in the boxes as :

[4 | 2 | 1 | 0] - [1 | 5] - [0 | 6] - [1 | 9] 9 | 1]

5. The Permanent Account Number (PAN) given to the taxpayer under the Income-tax Act, 1961 and Ward|Circle|Range are to be quoted here. If PAN is not allotted/obtained, indicate the GIR number, if any. If neither is given, write NOT ALLOTTED in the first row of boxes and mention Wealth-tax Ward|Circle|Range where assessed or assessable in the lower row of boxes after ascertaining the same from the Public Relation Officer of the Income Tax Office or at the Receipt counter.

6. For indicating the status please use following codes:

INDIVIDUAL 01

HINDU UNDIVIDED FAMILY 02

Example : If it is the case of an individual, the correct code will be 01.

7. Please use one of the following codes to indicate the residential status:—

RESIDENT 0 1

NON-RESIDENT 0 2

RESIDENT BUT NOT ORDINARILY 0 2

RESIDENT

Relevant provisions are in section 6 of the should be given first.

8. Write the name using block letters. Surname should be given first.

Leave one box blank each limb.

Example: Gupta Gauri Shankar.

[GIUPIITIA] [GIAIUIRIT] [SIHJAJNJKJAIJ]

9. Give complete residential and office addresses alongwith Telephone Number, if any and Pin Code & 10.

11. Strike out whichever is not applicable. If answer to (d) is in affirmative, give relevant information in the space provided thereunder.

Page 2 PART—1

A. IMMOVABLE PROPERTY.

I. Furnish in the given columns the details of all immovable properties held by the assessee, including agricultural land, whether located in or outside India, and whether assessable or exempt under section 5.

II. Details of similar assets belonging to any other person but includable in net wealth of the assessee should be given here. Such assets are :—

- (i) Assets transferred to certain relatives or to other persons for the benefit of those relatives or assets transferred under revocable transfer [section 4(1)(a)].
- (ii) Interest of a minor child admitted to the benefits of partnership in a firm [section 4(1)(b)].
- (iii) Individual property of assessee converted into the property of Hindu undivided family after 31-12-1969 [section 4(1A)].
- (iv) Moneys gifted by means of book entries [section 4(5A)].

III. If the assessee is a member of a co-operative housing society, the value of any building or flat allotted or leased should also be included in this sub-part of the Return.

IV. Each item of immovable property should be listed separately one below the other. If immovable property consists of any right in land or building, the nature of the right and the extent thereof should be clearly stated.

V. Value of immovable property should be declared as per rules 1 to 8 and 21 of Schedule III. Where the assets are held as assets of business for which accounts are maintained regularly, the valuation should be done as per rule 14 of this Schedule.

HELD AS ASSETS OTHER THAN IN BUSINESS OR PROFESSION

1. (a) The description and situation of the immovable property should be such as to enable the property and its boundaries to be clearly identified.

(b) Indicate here value of the immovable property as calculated on the basis of provisions of the relevant rule of Schedule III.

2. Indicate here the aggregate sum of amounts mentioned in 1(b).

3. Give here the description of the immovable properties shown at item 1 but exempt under various clauses of section 5(1). There are :—

- (i) Any property held under a trust or other legal obligation for any public purpose of a charitable or a religious nature in India. The exemption is not available in respect

of any property forming part of any business carried on by such trust. This prohibition is, however, subject to certain exceptions mentioned therein.—clause(i).

- (ii) Interest in the co-parcenary property of a Hindu undivided family as member thereof.—clause(ii).
- (iii) One building, which is recognised as the official residence of any ex-Ruler of an erstwhile Indian State, which is in his occupations.—clause(iii).
- (iv) One house or part of a house belonging to the assessee.—clause—clause(iv). This exemption and exemptions in respect of certain movable assets mentioned in section 5(1A) are subject to an overall ceiling of rupees five lakhs.
- (v) Small dwelling units (plinth area not exceeding 80 sq. meters) belonging to the assessee and constructed after 1-4-1976, and land appurtenant thereto. This exemption is available only for five assessment years counted from the date of completion of construction.—clause (iv).
- (vi) Small dwelling units (plinth area not exceeding 80 sq. meters) belonging to the assessee and used for the purposes of residences of employees of the assessee in any plantation or industrial undertaking belonging to assessee—clause (xxxa).

Further, under the provisions of section 2(e), agricultural land is not an asset for the purposes of Wealth-tax Act. However, after showing it at item 1, it should be excluded by claiming it as exempt here.

Also, under the provisions of section 6, in the case of an individual who is not a citizen of India or of an individual or Hindu undivided family not resident in India or resident but not ordinarily resident in India, the value of assets located outside India is not to be included in the net wealth. Therefore, after showing such assets, if any, at item 1 above, these should be claimed as exempt here.

4. The sum total of exemptions claimed at 3 should be indicated here.

5. Indicate here the balance (i.e. 2-4).

HELD AS ASSETS OF BUSINESS OR PROFESSION.

6. Give in the columns indicated here the following details of immovable properties held as assets of business or profession carried on by the assessee as proprietor :—

- (a) The description and situation of the property should be such as to enable the property and its boundaries to be clearly identified.
- (b) Indicate here the value of the property as calculated on the basis of the provisions of the relevant rule of Schedule III.

A copy of the balance-sheet or trial balance as on the valuation date and a copy of the auditor's report, if any, must be attached.

As indicated earlier, where the assets are held as assets of business for which accounts are maintained regularly, rule 14 of Schedule III will apply for purposes of valuation. However, details and value of assets falling under rule 14(2)(d)(iii) of this Schedule in respect of which wealth-tax is not payable under this Act, should first be shown here and then claimed as exempt at item No. 8 of this sub-part.

7. Indicate here the aggregate sum of amounts mentioned at 6(b).

8. Give here the description of immovable properties shown at item no. 6 but excluded under section 2(c) and exempt under sections 5(1) and 6. The exemptions available are the same as mentioned at item 3 above.

IMPORTANT NOTE :--

PLEASE ENSURE THAT THE CLAIM OF EXEMPTION IN RESPECT OF A HOUSE MENTIONED AT S. NO. (IV) OF ITEM 3 ABOVE IS MADE IN RESPECT OF ONE HOUSE ONLY, EITHER AT ITEM 3 ABOVE OR HERE. ALSO, THE EXEMPTION CLAIMED IN RESPECT OF ONE HOUSE IN THIS SUB-PART, ALONGWITH CLAIM OF EXEMPTION IN RESPECT OF CERTAIN MOVABLE ASSETS MENTIONED IN SECTION 5(1A), WHICH ARE ENUMERATED AT S. NOS. (1) TO (XVII) OF THE SECOND CATEGORY OF EXEMPTED MOVABLE ASSETS MENTIONED AT ITEM 6 OF SUB-PART B (REFER PAGES 7-8 OF THESE NOTES). SHOULD NOT EXCEED RUPEES FIVE LAKHS. HOWEVER, THIS IS SUBJECT TO A FEW EXCEPTION IN CERTAIN CASES, AS MENTIONED AT PAGES 7-8 of THESE NOTES.

FUTHER, THIS OVERALL CEILING OF RUPEES FIVE LAKHS IMPOSED BY SECTION 5(1A) WOULD ALSO APPLY TO THE PROPORTIONATE SHARE OF A PARTNER'S OR MEMBER'S INTEREST IN THE MOVABLE FOR IMMOABLE ASSETS OF THE ABOVE NATURE, WHICH ARE OWNED BY THE FIRM OR THE SUB-PART C AT PAGE 9 OF THESE NOTES).

9. The sum total of exemptions claimed at item No. 8 above should be indicated here.

10. Indicate here the balance (i.e. 7-9).

11. The aggregate value of immovable property (i.e. 5÷10) is to be indicated here.

Page 3

B. MOVABLE PROPERTY

1. Furnish in the given columns the detailed of all movable properties held by the assessee, including these mentioned in section 2(e) which are not assets of purposes of the wealth-tax Act, whether located in India or outside India, whether assessable or exempt under section 5 and whether wealth-tax is payable on them or not under section 5(2).

- II. Details of similar assets belonging to any other person but includible in the net wealth of the assessee under section 4 should also be given here. Nature of such assets is the same as mentioned at Serial No. II of sub-Part A of these notes.

- III. Value of movable property should be declared as per rules 1, 2, 9 to 13 and 17 to 21 of Schedule III where the assets are held as assets of business for which account's are maintained regularly, the valuation should be done as per rule 14 of this Schedule.

**HELD AS ASSETS OTHER THAN IN BUSINESS
OR PROFESSION**

- (i) Indicate here amount of cash in hand.

- (ii) Use the space provided here in specifying each loan or advance of Rs. 50,000/- and above owing to the assessee. Others below Rs. 50,000/- may be shown together.

The amount of loan or advance should include the Interest accrued thereon upon the valuation date, which has not been received and is outstanding on that date.

Furnish and attach with the return the following information in respect of each loan or advance of Rs. 50,000/- and above owing to the assessee :—

S. No.	Amount (Rs)	Name of the person owing the amount.	Whether loan or advance.	Date of loan/ advance	Mode of loan/ advance	Rate of Interest	Type of security if any	Remarks, if any
1	2	3	4	5	6	7	8	9

(iii) Indicate in the columns given here name of the bank and its branch, Account Number, nature of account, i.e. whether it is a Savings Bank Account or a current account, recurring deposit account, fixed deposit account, etc., and the amount in each account.

(iv) Indicate here the form of gold, silver, platinum or other precious metal, its gross and net weight in grams and its value as per rule 20 of Schedule III.

"Gold" means gold, including its alloy,, whether virgin, melted, remelted, wrought or unwrought, in any shape or form of a purity of not less than nine carats and includes any gold coin (whether legal tender or not), any gold ornament and other articles of gold (rule 2 of Schedule III). However, details of gold ornaments should be given against item (v) below. Gold of purity of less than nine carats should be shown under "others" at item (iv)(d).

(v) Itemwise details of jewellery should be given using columns (a) to (d). Thus, gold ornaments at (a) would include ornaments of gold with diamonds or other precious or semi-precious stones studded in them. Similarly, diamond jewellery in silver will be shown at (b) while diamond jewellery in platinum will be shown at (c). Precious or semi-precious stones which are not part of any gold or silver ornaments or ornaments of any other precious metal, but are kept separate or are set in any furniture, utensils or other articles or sewn into any apparel, should be shown at (d).

Valuation of jewellery is to be done as per rules 18 and 19 of Schedule III. In support of the valuation of jewellery, the prescribed form to be attached with the return is :—

(a) where the value of the jewellery on the valuation date is upto Rs. 5 lakhs, a statement in Form No. 0-8A, as prescribed by rule 13(c), signed by the assessee, or

(b) where the value of the jewellery on the valuation date exceeds Rs. 5 lakhs, a report of Registered Valuer in Form No. 0-8, as prescribed by rule 8D.

Note : The definition of the term "jewellery" is given in rule 2 of Schedule III. Page-4.

(vi) Companywise details of debentures, quoted, unquoted, should be indicated in the respective columns given here.

The value of a quoted debenture is determined as per rule 9 and the value of an unquoted debenture is determined as per rule 20 of Schedule III.

(vii) Companywise details of preference shares quoted/unquoted should be indicated in the columns given here.

The value of a quoted preference share is determined as per rule 9, and the value of an

unquoted preference share is determined as per rule 10 of Schedule III.

(viii) Companywise details of quoted equity shares should be indicated in the columns given here.

The value of a quoted equity share is determined as per rule 9, or at the option of the assessee, as per rule 9A of Schedule III. In the latter case, a certificate by a chartered accountant or by any person entitled to be appointed as an auditor of a company by virtue of section 226(2) of the Companies Act, 1956, in support of the valuation is to be attached with the return.

(ix) Companywise details of unquoted equity shares should be indicated in the columns given here.

The value of an unquoted equity share is determined as per rules 11 to 13 of Schedule III depending upon whether the unquoted equity share is in a company other than an investment company or in an investment company or in an interlocked company.

Note : The definitions of the terms 'debenture', 'preference share', 'equity share', 'quoted share', 'quoted debenture', 'unquoted share', and 'unquoted debenture' are given in rule 2 of Schedule III.

(x) Space given here should be utilised in furnishing details of other movable assets, such as :—

(a) Annuity rights.

(b) Assessee's right or interest in a policy of insurance.

(c) Assessee's right under any patent or copyright.

(d) Conveyance (Give details).

(e) Furniture, utensils and other articles (Give details).

(f) Tools and instruments necessary to enable the assessee to carry on his profession or his vocation (mention profession or vocation).

(g) Deposits under various schemes framed by the Government.

(h) Investments in various savings certificates, or annuity certificates of post office.

(i) Various bonds issued by the Government or other bodies like Public sector companies, corporations, etc.

(j) Government securities.

(k) Units in the Unit Trust of India or of Mutual Fund specified under section 19 (23D) of the Income-tax Act.

(l) Deposits with Industrial Development Bank of India.

(m) Deposits with housing authorities constituted in India by or under any law.

(n) Deposits with Co-operative Societies.

(o) Shares in Co-operative Societies.

- (p) Deposits under the Compulsory Deposit Scheme (Income tax payer's) Act, 1974.
- (q) Securities, bonds and debentures of local authorities.
- (r) Any other amounts due to assessee which remain unpaid.
- (s) Amount covered by insurance policies, which have become due and payable, but not paid.
- (t) Uncashed dividends, interests, etc.
- (u) Other assets not included in the above items.

2. Indicate here the grand total of items 1(i) to (ix).

Page—5

HELD AS ASSETS OF BUSINESS OR PROFESSION

3. Indicate in the columns given here the following details of movable properties held as assets of business or profession carried on by the assessee as proprietor :—

- (a) Description of assets of business or profession. Some of these assets can be :—
 - (i) Plant and machinery;
 - (ii) Furniture and fitting;
 - (iii) Patent rights, copy rights, etc;
 - (iv) Vehicles;
 - (v) Stores, spare parts, tools and instruments;
 - (vi) Stock in trade;
 - (vii) Sundry debtors;
 - (viii) Loans and advances owing to the assessee;
 - (ix) Cash in hand and at Bank;
 - (x) All other assets.

- (b) Indicate here the value of each asset as calculated on the basis of the provisions of the relevant rule of Schedule III.

A copy of the balance-sheet or trial balance as on the valuation date and a copy of the auditor's report, if any, must be attached.

As indicated earlier, where the assets are held as assets of business for which accounts are maintained regularly, rule 14 of Schedule III will apply for purposes of valuation. However, details and value of assets falling under rule 14(2)(d)(iii) of this Schedule in respect of which wealth-tax is not payable under this Act, should first be shown here, and then claimed as exempt at item No. 6 of this sub-part.

4. Indicate here the aggregate sum of amounts mentioned at 3(b).

5. Indicate here the total of amounts at 2 and 4.

b. Give here the description of movable property shown at items 1 and 3 above but exempt under section 5(1). Also claim exemptions in respect of the following types of movable properties :—

(i) Under the provisions of section 2(e), animals, a right to annuity subject to certain conditions mentioned in this section and any interest in a property for a period not exceeding six years only are not assets for the purposes of the Wealth-tax Act. Therefore, after showing these at items 1 or 3, as the case may be, these should be excluded by claiming these as exempt here.

(ii) Under the provisions of section 6, in the case of an individual who is not a citizen of India or of an individual or Hindu undivided family not resident in India or resident but not ordinarily resident in India, the value of the following assets is not to be included in his net wealth :—

- (a) Assets located outside India.
- (b) Assets in India in the form of any loans or debts owing to the assessee in any case where the interest payable on such loans or debts is exempt under section 10 of the Income-tax Act, 1961.

Therefore, after showing such assets, if any, at items 1 or 3, as the case may be, these should be claimed as exempt here.

As regards exemptions available under section 5(1), such exempted assets may broadly be classified into the following two categories :—

- (a) Assets which are exempt without an overall ceiling of rupees five lakhs.
- (b) Assets belonging to a group of assets in relation to which there is an overall ceiling of rupees five lakhs upto which assets in that group can be exempt.

Assets falling in the first category are enumerated in various clauses of section 5(1). These are :—

- (i) Assets held under a trust or other legal obligation for any public purpose of a charitable or religious nature in India. The exemption is not available in respect of any property forming part of any business carried on by such trust. This prohibition is, however, subject to certain exceptions mentioned therein clause (i).
- (ii) Interest in the co-parcenary property of a Hindu undivided family as member thereof clause (ii).
- (iii) Author's or Inventor's rights under any copyright or patent held by him in his own right as the author or inventor of such copyright or patent clause (v).
- (iv) Right or interest in any insurance policy before the money covered by the policy become due and payable. However, if in the case of a policy the term of premium payment is less than ten years, the exempt amount is proportionately reduced clause (vi).

- (v) Right to receive a pension or other life annuity in respect of past services under an employer clause (vii).
- (vi) Furniture, household utensils, wearing apparel, provisions and other articles intended for the personal or household use, but excluding jewellery. If any furniture, utensils, wearing apparel or other article is made wholly or partly of or contains gold, silver, platinum or any other precious metal or any alloys thereof or any precious or semi-precious stones are set in them or worked or sewn in them they are not exempt.
- Also any personal conveyance or conveyances (E.G., Motor Car, Scooter, Boat, Aircraft etc.) is/are exempt to the extent of Rs. 75,000 only. Their value in excess of this amount is to be included in the net wealth clause (viii).
- (vii) Agricultural and horticultural tools, implements and equipment used for agricultural; horticultural purposes mentioned therein clause (ix).
- (viii) Tools and implements necessary for carrying on assessee's profession or vocation. There are however exempt upto Rs. 50,000 only. Their value in excess of this amount is to be included in the net wealth clause (x).
- (ix) Amount of any professional fee due in the case of lawyers, medical practitioners, engineers, architects and accountants, who regularly maintain books of account on cash system of clause (xa).
- (x) Instruments and other apparatus used for scientific research clause (xi).
- (xi) Works of art, archaeological, scientific or art collections, books or manuscripts belonging to the assessee and not intended for sale clause (xii).
- (xii) Drawings, paintings, photographs, prints and any other heirloom not falling under (xi) above and not intended for sale However, jewellery, even if heirloom, is not exempt clause (xiii).
- (xiii) Jewellery in possession of ex-Rulers and recognised as heirloom subject to certain conditions mentioned therein clause (xiv).
- (xiv) 6-1/2 per cent Gold Bonds, 1977, 7 per cent. Gold Bonds, 1980 and National Defence Gold Bonds, 1980 clause (xiva).
- (xv) Special Bearer Bonds, 1991 clause (xivb).
- (xvi) Any "foreign exchange" asset in the case of an individual who is a citizen of India or a person of Indian origin and is not a resident in India (i.e. a non-resident Indian (NRI)).

"Foreign exchange asset" means the following assets acquired, purchased or subscribed to in convertible foreign exchange,-

- (a) shares in an Indian company
- (b) Debentures issued by an Indian public company.
- (c) Deposits with an Indian public company.
- (d) Securities of the Central Government.
- (e) Such other assets as may be notified for this purpose.

The exemptions in respect of the aforesaid assets, except shares in an Indian company, once available to such a NRI, continues even after he becomes resident in India clauses (xvic) & (xvica).

If case a NRI returns to India with the intention of permanently residing here, exemption from wealth tax is available to him for seven successive assessment years in respect of assets and money brought by him into India or assets acquired out of such moneys within one year immediately preceding the date of his return or at any time thereafter clause (xxxi).

- (xvii) Capital Investment Bonds notified in this behalf by the Central Government clause (xvid).
- (xviii) Certain notified debentures of a public sector company issued before 1-6-1988 clause (xvte) and second proviso to section 5(1A).
- (xix) Relief Bonds notified in this behalf by the Central Government clause (xvif).
- (xx) Non-repatriable bonds which are notified by the Government for purposes of exemption from income-tax under section 10(15)(iid) of the Income tax Act, 1961 and which have been purchased by a non-resident Indian in foreign exchange. This exemption is also available to the following individuals :—
 - (a) A nominee or survivor of such non-resident Indian
 - (b) An individual receiving the bonds by way of gift from such non-resident Indian.
 - (c) An individual who is a non-resident Indian at the time of purchasing the bonds, but becomes a resident in India in any subsequent year clause (xvig).
- (xxi) Credit balance, in a provident fund, in the case of a salaried employee maintained by his employer, to which Provident Act, 1925 applies or which is a recognised provident fund within the meaning of section 2(38) of the Income-tax Act, 1961 clause (xvii).
- (xxii) Credit balance, in the case of an individual in a Public Provident Fund under the Public Provident Fund Scheme, 1965 clause (xviii).

- (xxiii) Property received from Government in pursuance of any gallantry or merit award instituted or approved by the Central Government.....clause (xviii).
- (xxiv) A medal, trophy or any award in kind for any attainment, work or contribution in any field received from Government, a University or an institution affiliated to such University or any other institution, association or body approved by the Central Government for the purposes of this clause..clause (xviii).
- (xxv) Equity shares in any company carrying on an industrial undertaking in India which is manufacturing or producing any article or thing specified in the Ninth Schedule to the the Income-tax Act, where such shares form part of the initial issue of equity share capital made by the company after 28-2-1975. The exemption is available for a period of five successive assessment years following the date of issue of such equity shares. clause (xxa).
- (xxvi) Deposits under the National Savings Scheme referred to in section 80CCA of the Income-tax Act, 1961.clause (xxvb).
- (xxvii) Right or interest in Jeevan Dhara and Jeevan Akshay policies of the Life Insurance Corporation which have been notified under section 80CCA of the Income-tax Act. -961....clause (xxvb).
- (xxviii) Deposits in a notified scheme by a retired Government employee out of money due to him on account of retirement. This exemption is available with effect from the assessment year 1990-91. The exemption is also available to the employees of a public sector company with effect from the assessment year 1991-92.....clause (xxviic).
- (xxix) Moneys deposited under a house building scheme of a co-operative housing society as a member of that society for the allotment or lease of a house....clause (xxx).
- (xxx) Equity shares in any company carrying on an industrial undertaking in India which is manufacturing or producing any article or thing specified in Schedule II or which is exporting a certain percentage of its production as specified by the prescribed authority, held by an individual who is a citizen of India and is a non-resident in India during the year ending on the valuation date. Such shares should form part of the initial issue of equity share capital made by the company after 31-3-1976 or part of the issue of equity share capital made by the company after 31-3-1976 for purposes of extension or diversification of its industrial undertaking....clause (xxxiv).

The second category of exempted assets is a group of assets, which are also enumerated in sub-section (1) of section 5, but in respect of which sub-section (1A) of the section places an overall ceiling of Rs. 5 lakhs

on the aggregate amount to be exempted. These assets are :

- (i) Deposits under any scheme framed and notified in this behalf by the Central Government. Thus, 5-year and 3-year fixed deposits with Central Government in the State Bank of India, 1[2]3|5-year post office time deposits and 5-year post office recurring deposits are exempt under this provision... clause (xv).
- (ii) 10-year treasury saving deposit certificates, 15-year annuity certificates, deposits in post office savings banks, post office cash certificates, 12-year national plan savings certificates, 10-year defence deposit certificates and 12-year national defence certificates... clause (xvi).

The following important points may be noted in respect of exempted assets referred to at (i) and (ii) above ---

(a) The rules governing some of these investments also lay down certain ceilings upto which such investments can be made. For example, there is a limit of Rs. 25,000 for single account and Rs. 50,000 for a joint account in relation to fixed deposits with the Central Government in the State Bank of India. Ceilings of Rs. 1,20,000 and Rs. 2,40,000 have been placed in relation to 10-year post office savings bank cumulative time deosits. Such ceilings exists in respect of certain other investments also.

In all these cases the maximum amount exempt from wealth-tax is that upto which the deposits can be made under the rules governing these investments.

- (b) If these assets are held by the assessee continuously from a date prior to 1-3-1970, the limit of Rs. 5 laks will not apply to them.
- (c) The limit of Rs. 5 lakhs also does not apply in the case of deposits under the Post Office Savings Bank (Cumulative Time Deposits) Rules, 1981, which are fully exempt.
- (iii) Certain notified debentures of a public sector company issued on or after 1-6-1988. Such debentures issued before 1-6-1988 are fully exempt and are mentioned at S. No. (xviii) of the first category.....clause (xvie).
- (iv) Securities of the Central or a State Government other than those mentioned at S. No. (ii) above and at S. No. (xiv) of the first category.....clause (xxii).
- (v) Shares in an Indian company, other than those mentioned at S. No. (xxv) of the first category.....clause (xxiii).
- (vi) Such debentures issued by any co-operative society or any other institution or authority, as notified by the Central Government in this behalf. Example : debentures issued by

the State Electricity Boards, the Agro Industries Corporations, Housing Boards (for rural housing), Cooperative Processing and Marketing Societies and other approved State sponsored institutions have been notified for exemption ... (clause (xxiv)).

(vii) Units of a Mutual Fund set up by a public sector bank or a public financial institution, which is specified under section 10(23D) of the Income-tax Act, 1961... clause (xxiv).

(viii) Units in the Unit Trust of India..... clause (xxv).

(ix) Deposits under such National Deposit Scheme, as may be framed and notified by the Central Government in this behalf.

The overall ceiling of Rupees Five Lakhs is increased by Twenty Five Thousand Rupees in relation to these deposit..... (clause (xxv)) and third proviso to Section 5(1A).

(x) Deposits with banks, including deposits with a co-operative society carrying on banking business ... (clause (xxvi)).

(xi) Deposits with financial corporations engaged in providing long term finance for industrial development in India or with a public company formed with the main object of providing long term finance for construction or purchase of residential houses in India ... (clause (xxvii)).

(xii) Deposits with the Industrial Development Bank of India ... (clause (xxviii)).

(xiii) Deposits with authorities like the Delhi Development Authority and Improvement Trusts constituted for providing housing accommodation or for planning, development or improvement of cities, towns and villages ... (clause (xxviiib)).

(xiv) Deposits with the National Housing Bank. This exemption is available with effect from the assessment year 1990-91..... clause (xxvild).

(xv) Shares in any co-operative society .. clause (xxviii).

(xvi) Deposits made by a member with a cooperative society other than those mentioned at S. No. (x) above and at S. No. (xxix) of the first category ... clause (xxix).

(xvii) Assets, other than land or building or any rights therein or any asset exempted under various clauses of section 5(1), forming part of industrial undertaking belonging to the assessee ... (clause (xxx)).

Another condition, which is imposed by section 5(3), for claiming exemption, in respect of some of the assets, enumerated in various clauses of section 5(1), which are mentioned above, either in the first category or in the second category of exempted assets, is that these must be owned by the assessee for a period of at least six months ending with the relevant valuation date, otherwise the exemption is denied. The assets, in respect of which this condition applies are those which are mentioned at :—

- (a) Serial Nos. (xvii), (xviii), (xix) and (xxv) of the first category of exempted assets mentioned above.
- (b) Serial Nos. (i), (ii), (iii), (iv), (v), (vi), (viii), (x), (xi), (xii), (xiii), (v) and (xvi) of the second category of exempted assets mentioned above.

However, in the case of shares in a company, the holding period may be less than six months if the case of Capital Investment Bonds, notified debentures of public sector companies and Relief Bonds, the holding period may also be less than six months, if these are held by the assessee from the date on which these were subscribed to by him.

Also, where any of the exempted assets under section 5 (called as original asset) is converted into any other exempted assets mentioned at (a) and (b) above (called as new asset) within sixty days of ceasing to be the original asset, then for the purposes of computing the period of six months in relation to new asset, the period for which the new asset is owned is reckoned by taking into account also the period for which the original asset was owned within twelve months period ending on the relevant valuation date.

7. The sum total of exemptions claimed at 6 above should be indicated here.

8. The aggregate value of movable property (i.e. 5-7) is to be indicated here.

C. INTEREST IN A FIRM OR ASSOCIATION OF PERSONS (AOP) AS A PARTNER OR MEMBER THEREOF

1. Indicate in the columns given here the following details of interest held as a partner in a firm or as a member of an AOP :—

- (a) Name and address of each firm in which interest is held as a partner.
- (b) Name and address of each AOP in which interest is held as a member.

The value of the interest in the firm or AOP is to be determined as per rules 15 and 16 of Schedule III and in the columns provided for the same.

The value of interest of a minor child in a firm, who is admitted to the benefits of partnership in such a firm, which is to be included in the assessee's net wealth under the provisions of the proviso to section (4)(1)(b), should also be indicated at (a) above.

The sum total of these should be indicated in the outer column Totals of (a) and (b).

A copy of the balance-sheet of the firm or of the AOP or both, as the case may be, and a copy of the Auditor's report in each case, if any, must be attached.

2. Indicate here the total of items 1(a) and 1(b) above.

3. Indicate here the exemptions under section 5(1) and (1A) that are available to a partner or a member in respect of his interest in a firm or AOP.

section 10 of the Income-tax Act, 1961.

Thus, for example, if a non-resident assessee incurs a debt in India in respect of an asset located outside India so that such asset is not includable in his net wealth, the debt so incurred will also not be deductible from his net wealth.

- (3) Assets whose value is exempt under the provisions of sections 5(1) and 5(2). In the case of an asset which is exempt either wholly or partly under the provisions of sub-section (1A) of section 5, the non-deductibility of a debt which is secured on or incurred in relation to such an asset, shall be limited to the value of the exemption which that asset gets under the said sub-section (1A) [Explanation 2 of section 2(m)]. For example, if a debt of Rs. 6,00,000 has been incurred in respect of an asset of the value of Rs. 10,00,000, which is exempt upto Rs. 5,00,000 only under the provisions of section 5(1A), the debt to the extent of Rs. 5,00,000 shall not be deductible while the balance debt of Rs. 1,00,000 only shall be deductible from the net wealth. However, if the amount of debt is only Rs. 4,00,000, the entire debt shall not be deductible from the net wealth.

It is also provided that where the debt is secured or has been incurred in relation to an asset exempt under section 5(1A), the exemption shall be allowed first against the value of the asset on which or in relation to which the debt is secured or incurred and, thereafter, against the value of an other asset so exempt [Explanation to section 5(1A)]. For example, if the net wealth consists of a house of the value of Rs. 6,00,000 and shares of value of Rs. 6,00,000 both of which qualify for overall exemption of Rs. five lakhs under section 5(1A) and if a debt of Rs. 3,00,000 has been incurred against the house, exemption of Rs. 5,00,000 under section 5(1A) shall be allowed against the house property. Consequently, debt of Rs. 3,00,000 will not be deductible in computation of net wealth.

- (iii) The amount of tax, penalty or interest payable in consequence of any order passed under certain Direct Taxes Acts, which is outstanding on the valuation date, and

- (a) If the amount is disputed in appeal, revision or other proceedings, or

- (b) though not disputed as above, if the amount is outstanding for more than 12 months on the valuation date.

This prohibition of deduction of outstanding tax etc. is in respect of the demand created under the following Acts/Laws:—

- (1) any law relating to taxation of income or profits, e.g., Income-tax, State Legislation relating to taxation of agricultural income etc.,
- (2) Wealth Tax Act.
- (3) Gift-tax Act.
- (4) Expenditure Tax Act.
- (e) Indicate here the net amount of debt which is deductible in the computation of net wealth the net (i.e. c-d). As indicated earlier in these notes, for purposes of valuation of assets of business for which accounts are maintained regularly, rule 14 will apply Clause (e) of rule 14(2) enumerates the liabilities shown in the balance-sheet, which are not to be taken into account while determining the net value of such business assets. Care should be taken that such items are not claimed as debts. Sub-clause (v) of the clause (e) further provides that any debt owned by the assessee to the extent to which it has been specifically utilised for acquiring the asset in respect of which wealth-tax is not payable, should not be taken into account. However details and gross amount of any such debt should be first shown in the columns (a) to (c) and then it should be claimed as not deductible in column (d).

Details in respect of debts incurred in relation to the share of a partner in a firm or a member in an AOP should also be indicated in the columns (a) to (c) above. Thus if a partner has taken a loan of Rs. 50,000 for investing his capital in the firm or against the property, which he has transferred to the firm in consideration of his joining the partnership, the particulars of the debt of Rs. 50,000 should be shown here. In such a case also, if the value of the interest of the partner or the member in the firm/AOP is fully or partly exempt, the debt of Rs. 50,000 will not be deductible to the extent of the amount so exempt.

2. Indicate here the aggregate sum of the amounts mentioned at 1(e).

Debts other than those included in 1 Above.

3. Indicate in the columns given here details, similar to those given at S. No. 1 above in respect of the following debts,—

- (i) those which are secured on or incurred in relation to assets other than assets of busi-

It is provided in rule 16 of Schedule III that in determining the net wealth of the firm or the AOP, exemptions mentioned in section 5(1) and (1A) shall not be allowed. However, if the net wealth of the firm or AOP includes the value of any assets exempt under these provisions, the value of the interest of a partner or member shall be deemed to include the value of his proportionate share in the said assets and the provisions of section 5(1) and (1A) shall apply to such partner or member.

Therefore, the value of proportionate share of a partner or member in a firm or AOP which is exempt under section 5(1) or (1A) and is included in the clause of his interest in such firm/AOP, should be shown here.

Further, under the provisions of section 5(1)(xxxii), the value of the interest of the assessee in the assets [not being any land or building or any rights therein or any asset exempt under any clause of section 5(1)] forming part of an industrial undertaking belonging to a firm or AOP of which the assessee is a partner or a member, is also exempt. This exemption is, however, subject to the overall ceiling of Rs. 5 lakhs imposed by section 5(1A). If exemption under this provision is claimed, the same should also be shown here.

Rule 16 of Schedule III also provides that if the net wealth of the firm or AOP includes the value of any assets located outside India, value of interest of a partner or a member in the assets located in India shall be determined having regard to the proportion which the value of assets located in India diminished by the debts relating to those assets bears to the net wealth of the firm or AOP.

4. The sum total of exemptions claimed at 3 above, should be indicated here.

5. The aggregate value of interest in a firm or AOP as a partner or member thereof (2—4) is to be indicated here.

PAGE 6

D. DEBTS OWED BY THE ASSESSEE.

I. Please furnish details of all owed by the assessee in the appropriate columns in this sub-part whether secured on or incurred in relation to any property or not, whether deductible in computing the net wealth or not so deductible and whether located in India or outside India.

A debt is located at the place where it is payable. If the place of payment is not specified, then location of debt is determined by the place of residence of the creditor.

II. Similar details of debts referable to assets belonging to any other person, but includible in the net wealth of the assessee under section 4, should also be given here. Nature of such assets has been explained at S. No. II of sub-part A.

III. Charge amount on any assessable property included in the net wealth in sub-parts A, B and C should also be shown at the appropriate place in this sub-part. Nature of the charge and name, address and

relationship of the person in whose favour the charge exists should be given here.

RELATING TO BUSINESS OR PROFESSION CARRIED ON BY HIM.

1. Indicate in the columns given here the following details of debts relating to business or profession carried on by him as a proprietor :—

- (a) Description of debt, with name and address of the person from whom taken and rate of interest, if any.
- (b) If the debt has been secured on or incurred in relation to any property included at item 6 of sub-part A or item 3 of sub-part B, the property in question must be specified here, giving the same description as in sub-parts A & B so that the same can be easily co-related.
- (c) The gross amount of the debt should be given here, including the amount of the interest accrued but not paid as on the valuation date.
- (d) If out of the gross amount of a debt owed by the assessee mentioned in column (c), the entire debt or part of the debt is not deductible in computation of net wealth, the amount not deductible should be indicated in this column. Under the provisions of section 2(m), debts which are not deductible in computing the net wealth are :—
 - (i) In the case of an individual who is not a citizen of India or an individual or a Hindu undivided family not resident in India or resident but not ordinarily resident in India, debts located outside India.
 - (ii) Debts, which are secured on, or which have been incurred in relation to any property in respect of which wealth-tax is not chargeable. Property on which wealth-tax is not chargeable can be :—
 - (1) Assets which are excluded from the definition of assets given in section 2(e), such as agricultural land or movable property of the type mentioned at item 6 of sub-part B.
 - (2) Assets, which are not to be taken into account, under the provisions of section 6, in computing the net wealth of an individual who is not a citizen of India or an individual or a Hindu undivided family not resident in India or resident but not ordinarily resident in India. Such excluded assets are :—
 - (a) Assets located outside India.
 - (b) Assets in India in the form of any loans or debts owing to the assessee in any case where the interest payable on such loans or debts is exempt under

- ness or profession carried on by the assessee, and
- (ii) those, which are not related to any asset e.g. a loan taken for purposes of marriage or education of children or any other personal loans.

The detailed notes given in respect of debts at S. No. 1 above will also apply to the claim of debts here.

4. Indicate here the aggregate sum of amounts mentioned at 3(e).

5. Aggregate value of debts deductible (2+4) is to be indicated here.

E. STATEMENT OF NOTIFIED ASSETS ON WHICH WEALTH TAX IS NOT PAYABLE BUT WHICH TO BE INCLUDED IN THE NET WEALTH UNDER SECTION 5(2) AND HAVE BEEN SO INCLUDED IN THE ASSETS SHOWN IN SUB-PARTS B & C ABOVE.

1. Indicate in the columns given here the description of deposits with Central or State Governments and securities of Central or State Governments, which have been notified by the Central Government for exemption under section 5(2), the number and date of Central Government Notification granting such exemption from tax and the value of each such deposit and/or security.

2. Sum total of amounts shown at 1 should be indicated here.

3. Indicate here the value of the proportionate share of a partner or a member in the value of assets of the nature mentioned at item No. 1 above, included in the net wealth of the firm or AOP, which is included in the value of the interest of the partner or member in such firm or AOP.

4. Indicate here the sum total of amounts mentioned at 2 & 3 above.

NOTE :—The total value of assets shown in this sub-part will be relevant for purposes of calculation of wealth tax, as explained in Part II.

PAGE 7

F. STATEMENT OF NET WEALTH LOCATED OUTSIDE INDIA AND INCLUDED IN THE NET WEALTH i.e. IN THE ASSETS SHOWN IN SUB-PARTS A, B & C AND IN THE DEBTS SHOWN IN SUB-PART D.

1. Indicate here the total value of immovable properties located outside India and already included in item A.1 at page 2 of the return.

2. Indicate here the total value of immovable properties located outside India and already included in item A.6 at page 2 of the return.

3. Indicate here the sum total of 1 & 2.

4. Indicate here the total amount of exemptions relating to immovable properties shown at item 1 & 2 above and already included in items A.3 and A.8 at page 2 of the return.

5. Aggregate value of movable properties located outside India (i.e. 3-4) is to be indicated here.

6. Indicate here the total value of movable properties located outside India and already included in items B.1(i) to (x) at pages 3-4 of the return.

7. Indicate here the total value of movable properties located outside India and already included in item B.3 at page 5 of the return.

8. Indicate here the sum total of 6 & 7.

9. Indicate here the total amount of exemptions relating to movable properties shown at items 6 & 7 above and already included in item B.6 at page 5 of the return.

10. Aggregate value of movable properties located outside India (i.e. 8-9) is to be indicated here.

11. Indicate here the total value of interest held in a firm or AOP as a partner or member therof, which is located outside India and is already included in item C.1 at page 5 of the return.

12. Indicate here the total value of exemptions relating to the interest of a partner or member shown at item No. 11 above and already included in item C.3 at page 5 of the return.

13. Aggregate value of the interest held in a firm or AOP as a partner or member thereof, which is located outside India (i.e. 11-12) is to be indicated here.

14. Aggregate value of wealth located outside India (i.e. 5 + 10 + 13) is to be indicated here.

15. Indicate here the total value of debts referable to assets shown in this sub-part, which have already been in items D. 1 and D. 3 at page 6 of the return.

16. Indicate here the total value of net wealth located outside India (i.e. 14-15).

NOTE :—An individual who is not a citizen of India or an individual or a Hindu undivided family not resident in India or resident but not ordinarily resident in India need not fill this sub-part, as in his case assets and debts located outside India would already have been excluded from his assets and debts shown in sub-parts A, B, C & D.

This sub-part is to be filled up by an individual who is a citizen of India and is resident in India and by an Hindu undivided family who is resident in India. In such cases, the total value of net wealth located outside India, which is shown in this sub-part, will be relevant for purposes of calculation of wealth-tax, as explained in Part II.

G. STATEMENT OF NET WEALTH

1. Indicate here,—

A. Aggregate value of immovable property (Item A.11 at page 2 of the return),

B. Aggregate value of movable (Item B.8 at page 5 of the return).

- C. Aggregate value of interest held in a firm or AOP as partner or member thereof (item C.5 at page 5 of the return).
2. Aggregate value of wealth i.e. sum total of A, B & C should be indicated here.
3. Indicate here the aggregate value of debts (Item D.5 at page 6 of the return).
4. Net wealth (i.e. 2-3) is to be indicated here.
5. Mention here the net wealth as rounded off to the nearest multiple of hundred rupees, both in figures and words.
6. Amount of net belonging to other persons but includible in the net wealth of the assessee u/s 4 (as explained at S. No. II of sub-part A) and which has been included in sub-parts A, B, C & D is to be shown here.
7. Give here the name|names and relationship of such other person(s).

PAGE 8

PART II.

STATEMENT OF TAXES.

1. Wealth-tax payable on the net wealth at G.5 of Part I is to be indicated here. The tax should be calculated according to the rates specified in Part I of Schedule I. Further, rules 1, 3 & 4 of the said Schedule I provide for the method of determining the wealth-tax payable in the following types of cases.—

- (1) Where the net wealth of an assessee includes the value of any asset on which wealth-tax is not payable u/s 5(2) [rule 1 of Schedule I].
- (2) Where the assessee is an individual who is not a citizen of India and who is not a resident in India [rule 4 of Schedule I].
- (3) Where the net wealth of a resident assessee, being an individual who is a citizen of India or a Hindu undivided family, includes any asset located outside India [rule 4 of Schedule I].

2. Give here interest chargeable for late filing of return. The manner of computation of interest is laid down in section 17B.

3. The total amount of tax and interest payable (1+2) is to be indicated here.

4. Give details of the tax and interest, if any, paid on self assessment (i.e. before filing the return) and also attach challan(s) in support of the amounts so paid.

5. The net tax/interest payable or refund due, as the case may be, is to be indicated here. For indicating refund, precede it by a minus (—) symbol.

PART-III. INFORMATION WHEREF ASSESSEE IS A PARTNER OR MEMBER OF A FIRM|AOP.

Please give here complete information in the appropriate columns.

PART-IV. LIST OF DOCUMENTS|STATEMENTS ATTACHED.

Give here complete particulars of documents|statements attached to the return of wealth—

VERIFICATION

Read the instructions below the verification carefully before signing it. Fill all the relevant columns in the verification. Give the place and date as indicated.

[No. 8912 F. No. 143|1|9I-TPL]

G. STATEMENT OF NET WEALTH

1. Indicate here,—

A. Aggregate value of immovable (Item A.11 at page 2 of the return).

B. Aggregate value of movable property (Item B.8 at page 5 of the return).

C. Aggregate value of interest held in firm or AOP as partner or member thereof (item C.5 at page 5 of the return).

2. Aggregate value of wealth i.e. sum total of A, B & C should be indicated here.

3. Indicate here the aggregate value of debts (Item D.5 at page 6 of the return)

4. Net wealth (i.e. 2-3) is to be indicated here.

5. Mention here the net wealth as rounded off to the nearest multiple of hundred rupees, both in figures and words.

6. Amount of net wealth belonging to other persons but includible in the net wealth of the assessee u/s 4 (as explained at S. No. II of sub-part A) and which has been included in sub-part A, B, C & D is to be shown here.

PAGE 8

PART II.

STATEMENT OF TAXES.

1. Wealth-tax payable on the net wealth arrived at G.5 of Part I is to be indicated here. The tax should be calculated according to the rates specified in Part I of Schedule I. Further, rules 1, 3 & 4 of the said Schedule I provide for the method of determining the wealth-tax payable in the following types of cases :—

- (1) Where the net wealth of an assessee includes the value of any asset on which wealth-tax is not payable u/s. 5(2) [rule 1 of Schedule I].
- (2) Where the assessee is an individual who is not a citizen of India and who is not a resident in India [rule 4 of Schedule I].
- (3) Where the net wealth of a resident assessee, being an individual who is a citizen of India

or a Hindu undivided family, includes any assets located outside India [rule 4 of Schedule 1].

2. Give here interest chargeable for late filing of return. The manner of computation of interest is laid down in section 17B.

3. The total amount of tax and interest payable (1+2) is to be indicated here.

4. Give details of the tax and interest, if any, paid on self assessment (i.e. before filing the return) and also attach challan(s) in support of the amounts so paid.

5. The net tax/interest payable or refund due, as the case may be, is to be indicated here. For indicating refund, precede it by a minus (—) symbol.

PART-III. INFORMATION WHERE ASSESSOR IS A PARTNER OR MEMBER OF A FIRM/AOP.

Please give here complete information in the appropriate columns.

PART-IV. LIST OF DOCUMENTS|STATEMENTS ATTACHED.

Give here complete particulars of documents|statements attached to the return of wealth.

VERIFICATION

Read the instructions below the verification carefully before signing it. Fill all the relevant columns in the verification. Give the place and date as indicated:

[No. 8912/H. No. 143/I/91-TPL]
AKHILESH PRASAD, Director (TPL-I)

